भूमिका ।

भगवान् की असीम कृपा और गुणियों की गुणग्राहकता के कारण, "बालकोपयोगी-पुस्तकमाला" की पुस्तकों का प्रचार हिन्दी जानने वालों में उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। छोटे छोटे बालक एवम् बालिकाएं दोनों इस "पुस्तकमाला" की पुस्तकों को चाव के साथ पढ़ते हैं। इसी लिये हम भी इस "पुस्तकमाला" के लिये ढूंढ़ ढूंढ़ कर मनोरञ्जक पुस्तकें संग्रह करते हैं।

'पुस्तकमाला' की यह ग्यारहवीं पुस्तक है। हमने इस पुस्तक में अङ्गरेज़ी की Legends of Greece and Rome नाम की पुस्तक से कहानियाँ हिन्दी भाषा में संगृहीत की हैं। कहानियों को पढ़ने से विदित होगा कि पुराने समय के ग्रीस और रोम नाम के देशों के निवासियों की विद्या और उनका बुद्धि-बल किस श्रेणी का था।

आरम्भ में, "स्वर्गीय राज्य" के पढ़ने से विदित होगा कि भारतवर्ष के पौराणिक देवी-देवताओं का ग्रीस और रोम वालों ने अनुकरण किया है। जिस प्रकार इस देश में आतिथ्य सत्कार का माहात्म्य पुराणों और स्मृतियों में अनेक स्थलों पर गाया गया है, वैसे ही उक्त देशों में भी किसी समय अतिथियों के सत्कार को वहाँ वाले अच्छा समझते थे और उस देश के देवता भी अतिथियों का सत्कार करने वाले से सदा प्रसन्न रहते थे।

हिन्दी साहित्य में यह पुस्तक पहली है। इससे पुरातत्वान्वेषियों को और अङ्गरेज़ी भाषा न जानने वाले संस्कृत-साहित्य में निष्णात विवेचकों को भी, इसमें अनेक बातें विचारने योग्य मिलेंगी। यदि इस पुस्तक को लोगों ने उपयोगी समझा, तो इस ढङ्ग की और भी पुस्तकें प्रकाश करवायी जायँगी।

प्रयाग ;
माघकृष्ण १३ सं० ६७. } चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा।

ग्रीस और रोम की दन्त-कथाएँ।

१ स्वर्गीय-राज्य।

सैकड़ों हज़ारों साल हुए कि ग्रीस में एक जाति रहती थी। उस जाति के लोग समझते थे कि उनका देश संसार के सब देशों से उत्तम है। अपने देश के पहाड़, नदी, झील आदि देख कर, और सूर्य चन्द्रमा को नित्य निकलता देख कर, वे बड़ा आश्चर्य करते थे।

यह देख कर वे सोचते थे कि "अवश्य ही कोई ऐसी बलवती शक्ति है जो हमारे लिये सूर्य चन्द्रमा को चलाती है, जो समुद्र, पर्वत, नदी, जङ्गल आदि में राज्य करती है; जिसमें यह शक्ति है वे बड़े बलवान्, प्रसन्न और भले हैं और वे ही हमें सुख दुःख देते हैं।"

यह सोच वे उसको देवता और देवी कहने लगे। उन्होंने देवताओं की बड़ाई करते हुए बहुत से भजन बनाये। हर एक काम में वे उनकी पूजा किया करते थे।

ग्रीस के उत्तरी भाग में ओलिम्पस नामक एक पहाड़ है। यह बहुत ऊँचा है। इसकी चोटियाँ आकाश से बातें करती हुए मालूम पड़ती है। सारे पहाड़ पर घना हरा जङ्गल है। पुराने ग्रीक कहा करते थे कि वे बलवान् देवता इसी पर्वत पर रहा करते है।

वे कहा करते थे कि सब देवताओं का राजा जुपिटर है। जुपिटर पृथ्वी और आकाश के सब रहने वालों का स्वामी है। वही सूर्य और चन्द्रमा को चलाता है। वही सारे समुद्र और पृथ्वी पर शासन करता है। उसका अस्त्र वज्र है जिससे वह सब प्राणियों को दण्ड देता है।

वे कहते थे कि जुपिटर[१] की स्त्री जूनो है, जो जुपिटर को शासन करने में सहायता देती है, किन्तु जूनो बड़ी स्वाभिमानिन है और सब से डाह करती है। कभी कभी वह मनुष्यों को बड़ा दुःख देती थी। वह मोर को बहुत प्यार करती और उसी पर वह चढ़ा भी करती थी। मोर हर समय उसके साथ रहा करता था।

अपालो सूर्य था, वह सङ्गीत और भक्ति का देवता था। यद्यपि सभी देवता सुन्दर थे, तथापि अपालो सब देवताओं से अधिक सुन्दर था। यही नहीं वह प्रत्येक प्रकार के घाव अच्छे

[१] जुपिटर हिन्दुओं के इन्द्र के समान है। प्रायः सभी बातों मे वह इन्द्र से मिलता है। इन्द्र का अस्त्र वज्र है जुपिटर का भी अस्त्र वज्र है। इन्द्र सब देवताओं का राजा है। जुपिटर भी सब देवताओं का राजा है।

कर सकता था और वह ऐसी चतुरता से तीर चलाता था कि देखने वाले आश्चर्य करने लगते थे ।

अपालो की बहिन डायना थी । जब अपालो (सूर्य) सन्ध्या के समय थक कर पश्चिम दिशा में विश्राम लेने चला जाता था, तब वह अपने चाँदी के रथ पर चढ़ आकाश में घूमा करती थी । डायना शिकार की देवी थी और जब दिन में उसका भाई अपालो अपने सोने के रथ पर चढ़ आकाश मे घूमा करता था, तब वह जङ्गल की अप्सराओं को ले कर जङ्गल में शिकार किया करती थी ।

जिस तरह देवताओं में अपालो सब से सुन्दर था, उसी तरह सब देवियो मे वेनस सुन्दरी थी । वह समुद्र से पैदा हुई थी और सुन्दरता तथा स्नेह की देवी थी ।

वेनस के पुत्र का नाम क्युपिड था । वह प्रेम का देवता था । कभी कभी उसे धनुष का स्वामी भी कहते हैं । क्योंकि वह कभी अपने धनुष बिना नहीं देखा गया था, उसके तर-कस मे बड़े विचित्र तीर थे । क्युपिड में एक बात और थी । अर्थात् वह सदा ही बालक रहा, और अन्य बालकों की तरह कभी जवान न हुआ ।

जुपिटर के भाई का नाम नेपच्यून था । वह पृथ्वी के सारे समुद्र, नदी, तालाब आदि पर राज्य करता था । नदी के देवता, समुद्र निवासी और समुद्री अप्सराएँ उसकी प्रजा थीं । समुद्र के नीचे उसका बड़ा भारी महल था, जिसमें शङ्ख, घोंघे, सीप, मोती आदि जड़े थे ।

युद्ध की देवी का नाम मिनेरवा था । वह उल्लू (घुग्घू) को बहुत प्यार करती थी । वह अपने समय का अधिक भाग

सीने पिरोने में बिताती थी । इस विद्या में वह बड़ी निपुणा थी ।

इन्हीं देवताओं में अद्भुत मरकरी था । वह बड़ा चपल और हँस-मुख था । उसके खड़ाउओं में पर लगे थे, जिनके द्वारा वह बड़ी शीघ्रता से उड सकता था । उसकी टोपी में भी एक पर लगा था और उसके जादू के डण्डे में दो जीवित साँप लिपटे रहते थे और उसके भी सिरे पर दो पर लगे थे । इस जादू के डण्डे से वह सब प्रकार का काम कर सकता था । वह देव-दूत था, और सब देवता उसीके द्वारा, स्वर्ग और पृथ्वी में समाचार भेजा करते थे ।

पृथ्वी देवी को वे सीरिस कहते थे । वे कहा करते थे कि उसीकी कृपा से उन्हें अन्न और सब पृथ्वी से पैदा होने वाली चीज़ें मिला करती थीं ।

पृथ्वी के भीतर ठीक बीचों बीच एक राज्य था । इस राज्य में अँधेरा ही अँधेरा था । प्राचीन ग्रीक कहा करते थे कि मरने के बाद मनुष्यों का आत्मा वहीं जाता है । इस राज्य के राजा का नाम प्लूटो था । प्लूटो अकेला अपने सुनसान महल में रहा करता था ।

पैन, गडरियों और जङ्गलों का राजा था । वह बड़ा विचित्र जीव था, अर्थात् उसका आधा शरीर तो आदमी का था और आधा बकरे का । सब लोग-ख़ास कर गडरिये उसे प्यार करते थे । क्योंकि वह उनके जानवरों को ताका करता था ।

वलकन, लुहारों का देवता था । वे लोग कहा करते थे कि विस्यूवियस, इटना आदि ज्वालामुखी पहाड़ों में. वह काम किया करता है ।

ग्रीक और रोमन आदि, इन देवताओं की पूजा किया करते थे। बड़े बड़े मन्दिरों मे वे इन देवताओं की सुन्दर सुन्दर मूर्त्तियाँ रखा करते थे।

किसी किसी मन्दिर मे ज्योतिषी रहा करते थे, जो पुजारी का भी काम करते थे। जब किसी मनुष्य या देश पर कोई विपत्ति आ पड़ती थी, तब वे ज्योतिषी के पास जाकर, उसके निवारण का उपाय पूछा करते थे।

अतिथि-सत्कार का फल।

बहुत दिन हुए, एक दिन सन्ध्या को बूढ़ा फाइल्यूमन और उसकी बूढ़ी स्त्री वासिस अपनी छोटी सी कुटी के दरवाज़े पर बैठे-सूरज का डूबना देख रहे थे। वे दोनों भोजन कर चुके थे और बैठे बैठे आपस मे बातें कर रहे थे। अभी वे अपनी अंगूर की बेल और शहद के छत्तों की ही बातें कर रहे थे कि उन्हें पास के गाँव में भभ्भड़ सुनायी पडने लगा। लड़कों की चिल्लाहट और कुत्तों के भूकने से उनकी बातचीत में विघ्न होने लगा। धीरे धीरे वह शोर पास आने लगा। अन्त में उन्हें अपनी बातचीत छोड़नी पडी और वे इस तरह आपस में बातचीत करने लगे:—

फाइल्यूमन-मालूम पड़ता है कि कोई ग़रीब राहगीर इन लोगों से रहने को जगह माँगता है, पर हमारे पडोसी अपनी बुरी चाल के अनुसार, उसको भोजन और रहने की जगह देने के बदले, उस बेचारे पर अपने कुत्ते छोड़ रहे हैं और उनके लड़के उस पर ढेले चला रहे हैं।

वासिस-ईश्वर उसकी रक्षा करे। मैं चाहती हूँ कि हमारे पड़ोसी इस बुरी चाल को छोड़ दें, और मनुष्यों पर

कुछ दया दिखाया करें, हमारे पड़ोसी अपने लड़कों को, (जब वे बेचारे राहगीरों पर ढेले चलाते हैं—तब उनकी पीठ ठोंक कर,) और उत्साहित करते हैं।

फाइल्यूमन (अपना सफ़ेद सिर हिलाते हुए) ये लड़के किसी काम के न होंगे। मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि वे अपना चालचलन न सुधारेंगे तो आश्चर्य नहीं कि जल्द ही कोई अचानक दुर्घटना हो, किन्तु जब तक ईश्वर हमें और तुम्हें एक टुकड़ा रोटी दिये जाता है, तब तक हमें उचित है कि हम हर एक राहगीर की, जो हमारी कुटी पर आ जाय, ख़ातिरदारी करने को तयार रहें।

वासिस—सचमुच तुम बहुत ही ठीक कहते हो।

वे दोनों बूढ़े स्त्री-पुरुष बिल्कुल ग़रीब थे, और अपने पेट पालने के लिये कड़ी मेहनत किया करते थे। फाइल्यूमन दिन भर अपने बग़ीचे में काम किया करता था और वासिस गउओं की सेवा टहल में लगी रहती थी, तथा थोड़ा बहुत घी, मक्खन, दूध आदि बना लिया करती थी। उनके बाग़ में अंगूर की बेलें थीं और कुछ शहद के छत्ते थे। वे प्रायः रोटी और दूध ही खाया करते थे। पर जब कभी वे थोड़ा बहुत शहद और अंगूर भी खा लिया करते थे। किन्तु वे दोनों बड़े भले और दयावान् पुरुष थे। जब कभी कोई भूला भटका राहगीर उनके दरवाज़े पर आ जाता, तब वे उसकी ख़ूब ख़ातिरदारी करते और जो कुछ उनसे बन पड़ता उसकी सेवा में रख देते थे।

उनकी झोंपड़ी गाँव के पास एक टीले पर बनी हुई थी। टीले के नीचे गाँव बसा हुआ था। जहाँ वह गाँव बसा हुआ था, वह

जगह आस पास की जगह से नीची थी और बहुत पहिले वहाँ पर एक झील थी। उसके बीच मे उस समय भी एक छोटा सा तालाब था जिसका पानी गाँव वाले पिया करते थे।

उस गाँव के निवासी बडे कठोर हृदय थे। कदाचित् जो कुछ मैं कहूँगा उस पर तुम विश्वास न करोगे। वे दुष्ट अपने लडकों को ग़रीब राहगीरों को तङ्ग करने के लिये उत्साहित करते। जब लडके राहगीरों पर ढेले चलाते, तब वे उन्हें बढ़ावा देने के लिये ताली बजाते थे। उन लोगों ने बड़े और दुख-दायी कुत्ते पाल रखे थे। सो जब कोई राहगीर उस रास्ते से निकलता, तब वे उन्हें उस पर छोड देते थे। वे कुत्ते भौंकते थे और उन्हें अपने दाँत दिखा कर डराते थे। अकसर वे पीछे से उनका कपड़ा दाँतों से पकड लेते। उनमें से जो उस समय फटे कपड़े पहिने होता उसकी पूरी दुर्दशा हो जाती थी।

किन्तु जब कभी कोई अमीर बढ़िया रथ पर या सुन्दर घोड़े पर चढ़ कर, अपने सेवकों समेत उस गाँव मे आता, तब उस गाँव वालों के बराबर दूसरा कोई भी उतना सीधा और सभ्य नहीं दिखलायी पडता था। लड़के चुप हो जाते और कुत्ते बाँध दिये जाते थे। इस पर भी यदि कोई कुत्ता चिल्ला उठता तो उस का मालिक उसे लोहे के डण्डे से मारने लगता और उसे खाने को भी नहीं देता था।

इससे यह मालूम होता है कि वे किसी मनुष्य पर दया नहीं करते थे; पर जिसके पास वे रुपये देखते उसीकी आव-भगत करने लगते थे। फाइल्यूमन यह सब अच्छी तरह जानता था, क्योंकि बहुधा वह यह सब बातें देखा करता था। पर आज शोरगुल बहुत अधिक था। यह देख फाइल्यूमन ने कहा—"मैंने इतना शोरगुल तो कभी नहीं सुना।"

इसके थोड़ी देर बाद ही उन्होंने देखा कि दो आदमी, जो बहुत ही मैले और फटे कपड़े पहिने थे, चले आ रहे हैं, उनके पीछे बहुत से कुत्ते भौंकते और उन्हें डराते चले आते हैं, कुत्तों के पीछे लड़के आ रहे हैं जो कुत्तों को दोनों राहगीरों पर लुहाते और ढेले मारते आते हैं। उसी समय एक कुत्ते ने एक राहगीर का कपड़ा पकड़ लिया, राहगीर ने उसी समय उसे अपने डण्डे से मारा। कुत्ता चिल्लाता हुआ भागा।

यह देख फाइल्यूमन ने कहा--चलो हम लोग चल कर इन दोनों को अपनी झोपड़ी में ले आवें। नहीं तो यह हमें भी गाँव वालों की तरह समझेंगे और कभी भी ऊपर आने की हिम्मत न करेंगे।

वासिस-तुम जाकर उन्हें बुला लाओ और मैं जा कर देखूँ कि उन बेचारों के लिये घर में कुछ खाने को है भी कि नहीं?

इतना कह वासिस कुटी में चली गयी और फाइल्यूमन उन दोनों को लाने के लिये टीले से उतरा। नीचे पहुँच कर उसने उन दोनों को बुलाया। जब वे पास आ गये, तब वह उन्हें अपनी कुटी की ओर ले चला।

रास्ते में छोटी उमर वाले पथिक ने फाइल्यूमन से कहा--आपको मैं धन्यवाद देता हूँ। यहाँ तो हमारे साथ बिलकुल उस बर्त्ताव का उलटा बर्त्ताव किया गया है जो कि गाँव वालों ने हमारे साथ किया है। आप क्यों इस गाँव में रहते

फाइल्यूमन--ईश्वर ने हमें इसी जगह पैदा किया है, हम आपका अतिथि-सत्कार कर के बहुत प्रसन्न होंगे।

पहिले राहगीर ने हँसते हुए कहा, सचमुच हमें भी इस समय अतिथि-सत्कार की आवश्यकता है। उन लड़कों ने हमारे कपड़ों को कीचड़ से खूब रङ्ग दिया है और मेरे लबादे को एक कुत्ते ने फाड़ डाला है। मैंने उस कुत्ते को बड़े ज़ोर से मारा, शायद आपको भी उसकी चीख़ सुनाई दी हो।

फाइल्यूमन यह जान कर बहुत प्रसन्न हुआ कि गाँव वालों के बुरे बर्त्ताव से उन लोगों का दिल नहीं टूटा। वह पथिक बड़ा हँसोड़ मालूम पड़ता था। उसके हाथ में एक डण्डा था, जिसमें दो साँप लिपटे हुए थे। सिर पर अजीब टोपी थी जिसमें पर लगे हुए थे और पैर के खड़ाउओं में भी पर लगे थे।

फाइल्यूमन-क्या आप थक गये हैं? मैं जब आपकी उमर का था तब मैं दिन दिन भर चलने पर भी नहीं थकता था।

युवक पथिक-किन्तु जैसे जैसे सन्ध्या होती है वैसे ही वैसे मेरी थकावट भी बढ़ती जाती है।

इतने ही में वे सब झोपड़ी के दरवाज़े पर पहुँच गये। फाइल्यूमन ने दोनों को एक बेंच पर बैठने को कहा। दोनों पथिक बड़ी लापरवाही से उस बेंच पर बैठ गये। उस समय बूढ़े पथिक ने फाइल्यूमन से पूँछाः—

बूढ़ा पथिक--क्या यहाँ बहुत पहिले कोई एक झील थी, जहाँ पर आज कल गाँव है?

फाइल्यूमन-नहीं, मेरे समय में यहाँ कोई झील न थी, लड़कपन ही से यहाँ खेत, बाग़, पेड़ और गाँव देख रहा हूँ।

मेरे बाप और बाबा के समय मे भी यह जगह ऐसी ही थी। मैं सोचता हूँ कि मेरे बाद भी यह जगह ऐसी ही रहेगी।

उसने बड़ी गम्भीर और कड़ी आवाज़ मे कहा—यह कौन कह सकता है? इस गाँव के रहने वाले दया को भूल गये हैं। इसलिये अच्छा होता यदि वही पुरानी झील यहाँ फिर निकल आती।

उसके यह कहने के साथ ही फाइल्यूमन को मालूम पड़ा कि मानों एकाएक चारों तरफ अन्धेरा छा गया है। जब उसने सिर हिलाया तब ऐसा मालूम पड़ा कि हवा मे एकाएक वज्र घहरा उठे हैं।

जब तक वालिस उनके भोजनों के लिये तैयारी कर रही थी, तब तक वे लोग बातें करते रहे। जवान पथिक बात बात-मे फाइल्यूमन को हँसाता था, अन्त में दोनों में इस प्रकार बात-चीत होने लगी:—

फाइल्यूमन--कृपा कर आप अपना नाम तो बतलाइये।

जवान पथिक (हँसते हुए) तुम देखते नहीं कि मैं बड़ा चञ्चल हूँ। इसलिये तुम मुझे, मरकरी* के नाम से पुकार सकते हो। यह नाम मुझे अपने लिये ठीक मालूम पडता है।

फाइल्यूमन (आश्चर्य से) मरकरी! मरकरी!! सचमुच यह बड़ा विचित्र नाम है; और तुम्हारे साथी का नाम क्या है जो वहाँ बैठा चुपचाप कुछ सोच रहा है?

---

* मरकरी—पारा।

कदाचित् उसका नाम भी तुम्हारे नाम की तरह ही विचित्र होगा।

मरकरी–इनकी आवाज बड़ी भारी है, इसलिये अच्छा होता तुम वज्र से इनका नाम पूँछते। वज्र ही इनका नाम ठीक ठीक बता सकता है।

इसके बाद वे लोग थोड़ी देर तक बातचीत करते रहे। इतने ही में बासिस भोजन तैयार कर के उन दोनों को बुलाने आयी और बोली :—

बासिस–यदि हम लोग यह जानते कि आप लोग आवेंगे, तो हम दोनों बिना भोजन किये ही रह जाते। पर मैंने आज दूध के अधिक भाग का मक्खन बना डाला है और रोटी भी प्रायः चुक गयी है। मुझे शोक है कि मैं आपका आज भले प्रकार अतिथि-सत्कार न कर सकी। मुझे अपने ग़रीब होने का दुःख नहीं है, पर जब कभी कोई दुखिया पथिक मेरे दरवाज़े पर आता है; तब मुझे दुःख होता है कि मैं उसका अतिथि-सत्कार नहीं कर सकती।

बूढ़ा यात्री–देवी! आप कोइ चिन्ता न करें, सब ठीक हो जायगा। यदि बेचारे यात्री को भले बर्त्ताव के साथ भोजन दिया जाय तो वह भोजन अमृ[illegible] हो जाता है।

बासिस–आप लोगों के लिये थोडा सा दूध, शहद और अंगूर के कुछ गुच्छे हैं। थोड़ी सी रोटी भी मिल गयी है।

मरकरी (हँसते हँसते) क्यों बुढ़िया यह तो तू हम लोगों का नेवता कर रही है। देखना मैं किस बहादुरी से खाता हूँ। मुझे आज जितनी भूख लगी है उतनी पहिले कभी नहीं लगी थी।

वासिस ने डर कर, फाइलयूमन के कान में धीरे से कहा- यदि इस जवान को ऐसी भूँख लगी है तब तो आधा भी भोजन न निकलेगा।

इसके बाद वे सब कुटी के भीतर चले गये। भीतर भोजनों के लिये थाली रखी हुई थी, उसमें थोड़ा सा मक्खन, रोटी का एक टुकड़ा, कुछ अंगूर और थोड़ा सा शहद रखा था। एक छोटे से घड़े में कुछ दूध था।

पहिले वासिस ने दोनों यात्रियों को दो बेलों में भर कर, दूध दिया। वे दोनों सब दूध एक घूँट ही में पी गये। मरकरी ने कहा-

मरकरी-बूढ़ी माँ! आज हम लोग दिन भर बहुत चले है और दिन में गर्मी भी बहुत थी इस लिये हमें बड़ी प्यास लगी है। कृपा कर हमें थोड़ा सा दूध और दो।

वासिस बड़े असमञ्जस में पड़ी। अन्त में उसने कहा-मैं बड़ी दुःखी और लज्जित हूँ। पर असल बात यह है कि घड़े मे एक बूँद भी दूध नहीं है।

यह सुन कर मरकरी उठा और हाथ में घड़ा ले कर बोला- 'नहीं, नहीं, जैसा तुम कह रही हो असल मे वह बात नहीं है, देखो--घड़े में अभी कितना दूध है!"

यह कह कर उसने दूध से अपने और अपने साथी के कटोरों को भर दिया। यह देख वासिस को बड़ा आश्चर्य

हुआ, उसने सोचा कि कदाचित् उसे धोखा हुआ हो। वास्तव मे घड़े में दूध था। इतने मे मरकरी ने कहा-"बूढ़ी माँ, हमारी प्यास अभी तक नहीं बुझी, कृपा कर थोड़ा सा दूध और दो।"

वासिस ने सोचा कि दूध तो वैसे ही कम था तिस पर वे लोग दो बार दूध पी चुके हैं। इसलिये उसने सोचा कि इस घड़े में ज़रा भी दूध न होगा। पर उन दोनों को विश्वास दिलाने के लिये वह घड़े को उठा, दूध उड़ेलने के लिये उसे उलटा करने लगी। पर आश्चर्य! खाली घड़े में से दूध निकलने लगा और इतना दूध निकला कि दोनों कटोरे फिर भर गये।

इसके बाद दोनों ने भोजन करना आरम्भ किया। जब वासिस उन्हें रोटी देने लगी, तब उसे मालूम होने लगा कि मानो वह रोटी उसी समय आग के ऊपर से उतारी गयी है। जब उसने शहद का बरतन खोला; तब सारा कमरा सुगन्धि से भर गया। ऐसा मालूम पड़ने लगा कि मानो ओलिम्पस पहाड़ के सारे सुगन्धित फूल उस कमरे में ला कर रख दिये गये हैं।

जब दोनों पथिक भोजन कर रहे थे; तब वासिस ने फाइ-ल्यूमन से दूध का सब हाल कहा और यह भी कहा कि उसने ऐसा हाल कभी सुना भी न था।

फाइल्यूमन (मुसकुराते हुए) मैंने भी ऐसी घटना कभी नहीं सुनी। पर मेरी समझ में, तुम्हें भ्रम हुआ। यदि मैं वहाँ होता, तो मैं अवश्य सब हाल जान जाता।

वासिस–नहीं, नहीं; मैंने धोखा नहीं खाया वे बड़े विचि' आदमी हैं।

उस समय वे दोनों रोटी और शहद खतम कर के अंगूर खा रहे थे। फाइल्यूमन और वासिस को ऐसा जान पड़ा कि मानो

अंगूर बड़े हो गये हैं। मरकरी ने खाते खाते कहा—"यह अंगूर बड़े मीठे हैं। तुम ये कहाँ से लाते हो?"

फाइल्यूमन—ये तो हमारी ही अंगूर की बेलों में पैदा होते हैं। पर हम इन्हें अच्छा नहीं समझते।

मरकरी—पर मैंने तो इससे अच्छे अंगूर कभी नहीं खाये। कृपा कर मुझे एक बेला दूध और दो।

इस बार फाइल्यूमन ने आगे बढ़ कर, दूध का घड़ा उठा लिया और जानना चाहा कि वासिस को भ्रम हुआ है कि यह बात सच है। इसलिये उसने घड़े में झाँक कर देखा तो उसे बिलकुल ख़ाली पाया। पर एकाएक घड़े की तरी में से दूध निकलता मालूम पड़ा और बात की बात में घड़ा दूध से भर गया। यह देख उसके आश्चर्य का कुछ ठिकाना न रहा।

खा पी कर दोनों पथिक बाहर आये। फाइल्यूमन ने अपना सोने का कमरा उन दोनों को सोने के लिये दे दिया और आप रसोई घर में सो रहा। सोने के पहिले वे दोनों इस घटना के बारे में बातचीत करते रहे।

चारो जनें बड़े तड़के जाग गये। उसी समय दोनों यात्री चल खड़े हुए। अँधेरा होने के कारण बूढ़े फाइल्यूमन और वासिस भी उन्हें रास्ता दिखाने चले। रास्ते में चारों आदमी आपस में बातचीत करते हुए चले जाते थे। इतने ही में फाइ-ल्यूमन ने कहा—

फाइल्यूमन—यदि हमारे पड़ोसी यह जानते कि यात्रियों की सेवा और ख़ातिरदारी करना कितना अच्छा काम है तो निस्सन्देह वे अपने लड़कों को कभी भी ऐसा काम

न सिखाते और कुत्तों को यात्रियों पर कभी न छोड़ते।

बासिस—यह बड़े दुःख और लज्जा की बात है। मैं आज ही गाँव में जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि वे बड़े ख़राब आदमी हैं।

मरकरी ने नटखटी के साथ मुसकुरा कर कहा—मुझे ऐसा जान पड़ता है कि उनमें से कोई भी अब तुम्हें अपने घर पर न मिलेगा।

बड़े यात्री ने गम्भीर हो कर कहा—यदि आदमी ग़रीबों को भी अपने भाई की तरह नहीं मानते, तो उनका पृथ्वी पर रहना निरर्थक है। क्योंकि पृथ्वी स्नेह और भक्ति पर ही स्थिर है।

उसी समय मरकरी ने मुसकुरा कर और इधर उधर देख कर कहा—वह गाँव कहाँ है। मुझे तो आस पास कोई गाँव नहीं दिखलायी देता।

इतना सुन फाइल्यूमन और बासिस गाँव की ओर देखने लगे। पर उन्हें घर, बाग़, पेड़, सड़कें आदि कुछ न दिखलायी दीं, वहाँ किसी गाँव का नाम निशान भी न था, किन्तु उस उपजाऊ घाटी की जगह पर एक बड़ी झील लहरा रही थी। झील का पानी नीला था और लबालब भरा था। उसके पानी पर बादलों की छाया पड़ रही थी। उसी समय धीरे से हवा चलने लगी और झील का सारा पानी हिल उठा।

फाइल्यूमन और बासिस को वह झील बड़ी पुरानी जान पड़ती थी। वे सोचने लगे कि यहाँ कभी कोई गाँव था ही नहीं, पर अब उन्हें उस गाँव के रहने वालों के चालचलन और

घर द्वार की याद आयी तब उन्हें मालूम हो गया कि वह गाँव डूब गया।

जहाँ पर कल गाँव था, वहाँ आज झील हिलोरें मार रही है!

फाइल्यूमन ने चिल्ला कर कहा—अरे! हमारे पड़ोसियों की क्या दशा हो गयी!!

बूढ़े यात्री ने गम्भीर और कड़ी आवाज़ में उत्तर दिया—अब वे पुरुष और स्त्रियों के रूप में नहीं हैं। उनके जीवन से न तो कोई लाभ था और न उनमे कोई भली बात थी। उन्होंने कभी भी अपने भाइयों की सहायता नहीं की इसलिये वह झील, जो पहिले यहाँ थी फिर निकल आयी है।

मरकरी ने हँसते हँसते कहा—और वे मूर्ख आदमी मछली बना दिये गये हैं। सो जब कभी तुम्हें मछली खाने की इच्छा हो तब तुम जाल डाल कर, अपने पुराने पड़ोसियों को पकड़ लेना।

बासिस ने काँपते काँपते कहा—नहीं, मैं कभी भी उनको न पकड़ूँगी।

बूढ़ा यात्री फिर कहने लगा—और तुम दोनों ने थोड़ा सा भोजन दे कर थके माँदे ग़रीबों का अतिथि-सत्कार किया था; इसलिये तुम्हारा दूध का घड़ा कभी दूध से ख़ाली न होगा। जो भोजन ओलिम्पस पहाड़ पर देवताओं के लिये आते हैं, वे ही भोजन कल तुम्हारे यहाँ आये थे और उन्हें देवताओं ने खाया था।

मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। जो तुम चाहो मुझसे माँग सकते हो।

यह सुन कर ये दोनों अकचका गये। मारे हर्ष के उनकी बोलती बन्द हो गयी। अन्त में वे दोनों एक साथ बोलेः—

"जब तक हम जियें; तब तक हम दोनों साथ ही रहें और जब मरें तब एक साथ ही मरें। जिससे एक को दूसरे का वियोग न सहना पड़े।"

बूढ़े यात्री ने कहा "यही हो;" और इतना कह कर उसने उनसे अपनी कुटी देखने को कहा। पर आश्चर्य! उनकी छोटी सी कुटी की जगह पर अब एक भारी इमारत खड़ी थी। इमारत बिलकुल संगमरमर की बनी हुई थी और उसका दर्वाज़ा बड़ा ऊँचा था।

जब वे दोनों उधर देख रहे थे; तब उस यात्री ने कहा—

यात्री—यह तुम्हारा घर है। जिस तरह तुम उस छोटी सी कुटी में अतिथि-सत्कार किया करते थे, उसी तरह इस महल में भी किया करो।

यह सुन कर बूढ़े फाइल्यूमन और वासिस, दोनों उनके पैरों पर गिर पड़े, किन्तु न तो वहाँ मरकरी ही था और न वह बूढ़ा यात्री। दोनों अन्तर्द्धान हो गये थे।

फाइल्यूमन और वासिस उस महल में रहने लगे। वहाँ उसी तरह से यात्रियों का आदर सत्कार करते रहे जैसे कि अपनी पुरानी कुटी में करते थे। वह दूध का घड़ा कभी ख़ाली न होता। जब कोई धर्मात्मा, भला और उदार-हृदय यात्री आ

जाता तब उसे वह दूध बहुत मीठा लगता, पर जब कोई पापी, दुष्ट और सूम उसका दूध पीता, तब उसे वह खट्टा लगता और उसकी जीभ जल जाती थी।

एक दिन सवेरे जब दोनों अपने दर्वाज़े पर खड़े थे, तब दोनों एकाएक ग़ायब हो गये। उनकी जगह ओक और लिंडन के पेड़ पैदा हो गये। ओक फाइल्यूमन और लिंडन वासिस थी।

इस तरह दोनों का अन्त हुआ। अतिथि-सत्कार की महिमा ही ऐसी है!
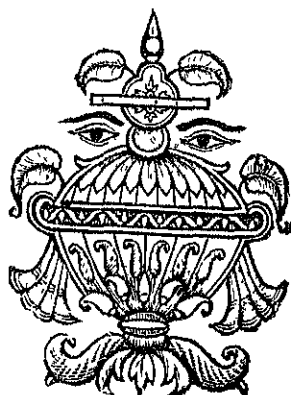
परसियस।

बहुत दिन हुए, ग्रीस में डाने (Danae) नाम की एक राजकुमारी रहती थी। उसके एक छोटा सा लड़का था, जिसका नाम परसियस था। उसका पति बहुत दूर रहता था और डाने की रक्षा करने वाला कोई न था।

एक दिन कइ एक दुष्ट आदमियों ने, उन दोनों को एक छोटी सी नाव में बैठा कर, समुद्र में छोड़ दिया। नाव कई दिन तक इधर उधर तैरती रही। अन्त में, ईश्वर की कृपा से लहरों ने उसे एक द्वीप में जा लगाया।

कुछ दयावान् लोगों ने उन दोनों को देखा और वे उन्हें शहर में ले गये। वहाँ उन्होंने उनको रहने के लिये एक मकान दिया।

दोनों वहाँ कई साल तक रहे। अन्त में परसियस जवा हो गया। जवान होने पर वह बड़ा वीर और निडर निकला पर उस द्वीप का राजा उन दोनों से नाराज़ था और उनको कष्ट देना चाहता था। इसलिये उसने पहिले परसियस को किसी तरह वहाँ से हटाना चाहा। क्योंकि उसने सोचा कि लड़के के

चले जाने पर वह उसकी माँ के साथ अपनी इच्छानुसार बर्त्ताव कर सकता है।

अन्त मे उसने परसियस को एक ऐसे काम पर भेजना चाहा, जो बड़ा भयङ्कर था। पर वह जानता था कि परसियस वहाँ जाने को तैयार हो जायगा और वहाँ से फिर वह कभी लौट कर न आ सकेगा।

समुद्र के बीच मे एक बड़ा भयङ्कर द्वीप था। उस द्वीप मे तीन भयङ्कर बहिनें रहती थीं, जो राक्षसी थीं। उनके शरीर की बनावट आधी स्त्री और आधी दैत्य जैसी थी। यद्यपि उनका चेहरा बड़ा सुन्दर था; तथापि उनका शरीर बड़ा भयङ्कर था। उनके बदन में चमड़े की जगह छिलका था, उनके हाथ पीतल के थे; पर इन सब से भयङ्कर उनके सिरों में बालों की जगह, हज़ारों ज़हरीले काले काले साँप लपटे हुए थे, जो सदा फुफकारते रहते थे।

यही नहीं, इन सब से अधिक भयावनी वस्तु उनकी आँख थी। क्योंकि जो कोई उनकी आँख की ओर देखता, वह उसी समय पत्थर का हो जाता था।

इन तीनों में सब से भयावनी राक्षसी का नाम मडूसा था। राजा ने परसियस से इसी राक्षसी मडूसा का सिर कटवा कर मँगवाना चाहा। क्योंकि वह जानता था कि पहिले तो परसियस मडूसा के पास पहुँचेगा ही नहीं और जो पहुँचेगा, और उसके साँपों से बच गया तो बिना उसका चेहरा देखे वह उसका सिर नही काट सकेगा, और यदि उसका चेहरा देखेगा, तो वह अवश्य पत्थर का हो जायगा।

यह सोच विचार कर उसने परसियस को बुलवा भेजा। जब परसियस उसके सामने गया; तब वह उसकी वीरता की बड़ी बड़ाई करने लगा। अपनी वीरता और साहस की बड़ाई सुनकर, परसियस को ताव आ गया और वह बोलाः—

परसियस—महाराज! आप ठीक कहते हैं। संसार में ऐसा कोई काम नहीं है; जिससे मैं डर जाऊँ।

राजा ने प्रसन्न होकर कहा—मैं यह जानता था कि मेरे राज्य मे तुम ही बड़े वीर हो, इसलिये मैंने तुम्हारे लिये एक काम रख छोडा है।

परसियस ने प्रसन्न होकर कहा—महाराज! क्या आप मुझे इस योग्य समझते हैं?

राजा—यदि तुम अपने को वीर और साहसी कहते हो, तो तुम मडूसा का सिर साँपों समेत ले आओ।

परसियस ने प्रसन्नता से जोश में आकर इस काम के करने का बीड़ा उठाया और वह अपने घर की ओर चला। वह बेचारा क्या जानता था कि दुष्ट राजा मुझे मेरी मौत के पास भेज रहा है।

जब परसियस महल से बाहर आया, तब वह मडूसा के मारने की तदबीर सोचने लगा, पर उसे कोई भी तदबीर न दिखायी दी। अन्त में वह नगर से बाहर जाकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया और सोच विचार करने लगा।

सोचते सोचते उसकी आँखों में आँसू निकलने लगे। उसी समय किसी ने कहा—"परसियस! तुम क्यों रोते हो?" परसियस ने अपना सिर उठाया और वह आश्चर्य से इधर,उधर देखने

लगा। उसने अपने सामने मरकरी को देखा, पर वह उसे पहिचानता न था। पर वह मरकरी की सूरत देख कर, जान गया कि वह कोई साधारण आदमी नहीं है, इसलिये उसने अपना सब हाल कह डाला।

जब वह अपना हाल कह चुका, तब मरकरी थोड़ी देर तक सिर झुकाये, कुछ सोचता रहा और अन्त में कहने लगा—

मरकरी—अरे निर्बोध बालक! तूने बिना समझे बूझे एक भयङ्कर कार्य अपने सिर उठा लिया है, पर मेरी सहायता से तू उसे कर सकता है। पर पहिले तू यह कह कि जैसे मैं कहूँगा वैसे ही तू करेगा।

मरकरी की ऐसी बातें सुन कर, परसियस को कुछ ढाँढ़स बँधा और उसने प्रतिज्ञा की कि वह उसकी आज्ञानुसार सब काम करेगा।

परसियस और मडूसा।

जब से परसियस पैदा हुआ था तब से सारे देवता उस पर दया करते थे। सो जब मरकरी उस के लिये देवताओं से सहायता माँगने गया तब सभों ने उसको सहायता दी।

प्लूटो ने उसे अपनी तलवार दी। उसको हाथ में लेकर लड़ने वाला किसी को दिखलाई नहीं देता था। मिनरवा ने उसको अपनी ढाल दी, जो सोने की तरह चमकती थी, और मरकरी ने उसे अपनी तलवार और खड़ाऊँ दे दिये जिनके द्वारा वह बहुत शीघ्र उड़ सके।

अब परसियस को केवल मडूसा के द्वीप की रास्ता जानना भर बाक़ी था। उन तीन बहिनों को छोड कर सारे संसार में दूसरा कोई भी उस द्वीप की रास्ता नहीं जानता था। वे तीनों बहिनें एक पहाड़ की गुफा में रहती थीं। वे बड़ी विचित्र औरतें थीं, पर सब से अधिक बात जो आश्चर्य की थी वह यह थी कि उनमें से हर एक के दो दो आँखें न थीं; पर उन तीनों के बीच में एक ही आँख थी; जिसे वे बारी बारी से काम में लाती थीं।

जब वह आँख एक बहिन लगाये रहती थी, तब दूसरी दोनों अन्धी हो जातीं और जब वह आँख एक बहिन दूसरी को देने लगती तब तीनों अन्धी हो जाती थीं।

किन्तु वह आँख कैसी विचित्र थी! उस विचित्र आँख से वे सारे संसार का हाल देख और जान सकती थीं। जहाँ जाने और पहुँचने में बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ होतीं और जहाँ पहुँचना ही असम्भव होता, वे बहिनें उस आँख के द्वारा वहाँ का हाल बता देती थीं।

मरकरी परसियस को इन्हीं तीनों बहिनों के पास ले गया। मरकरी आप दूर एक झाड़ी में छिप गया और उसने परसियस को कुछ समझा कर, उस गुफा के पास भेजा। परसियस गुफा के दरवाज़े पर आकर छिप रहा।

थोड़ी देर में उन तीन बहिनों में से एक बहिन उस आँख को लगाये गुफा के दरवाज़े पर आयी और उसके द्वारा दूर दूर देशों की बातें कहने लगी। दोनों बहिनें उन बातों को सुनती रहीं और अन्त में उन्होंने भी चाहा कि वे उस आँख से सब हाल स्वयं देखें। एक बहिन बोली—"अरी बहिन! अब मेरी बारी है। अब मुझे यह आँख दे।" यह सुन दूसरी बहिन ने उसकी बात काट दी और कहा—"नहीं, नहीं, अब तो मेरी बारी है। अब आँख मुझे दे।' पर बीच मे तीसरी बहिन बोल उठी "थोड़ी देर ठहर। मुझे मालूम पड़ता है कि कोई आदमी उस झाड़ी के पीछे है।"

इसी तरह उन तीनों मे थोड़ी देर तक कहा सुनी होती रही। अन्त में तीसरी बहिन बोली—"ले तू ही देख, मैं आँख निकाल देती हूँ।" यह सुन परसियस आगे बढ़ आया और बिलकुल उनके

पास खड़ा हो गया। जब तीसरी बहिन ने अपने सिर से वह आँख निकाली तब तीनों बहिनें अन्धी हो गयीं। जैसे ही वह अपनी आँख दूसरी बहिन के माथे में लगाने लगी वैसे ही परसियस ने आगे झपट कर, उसके हाथ से वह आँख छीन ली।

अब तीनों बहिनों में बड़ा झगड़ा आरम्भ हुआ। तीनों एक दूसरे से कहने लगीं कि उनके पास वह आँख नहीं है। यह झगड़ा बड़ी देर तक बना रहा और यदि परसियस न बोलता तो न जाने वह कितनी देर तक बना रहता।

परसियस—भली बहिनों! घबड़ाओ मत। तुम्हारी आँख मेरे पास है और जब तक तुम मुझे एक बात न बतादोगी तब तक इसको मैं न दूँगा।

यह सुन तीनों बहिनें बड़े क्रोध से उधर झपटीं जिधर से आवाज़ आयी थी; पर परसियस उन तीनों से तेज़ था। वह मरकरी के परदार खड़ाउओं के द्वारा आकाश में उड़ गया और थोड़ा ऊपर जाकर बोला:—

परसियस—जब तक तुम मुझे मडूसा के द्वीप का रास्ता न बतलाओगी तब तक मैं तुम्हें तुम्हारी आँख न लौटाऊँगा।

यह एक ऐसा भेद था जिसे वे बतलाना नहीं चाहती थीं। पर अब वे लाचार थीं। क्योंकि उनकी आँख चली जाने से उनकी बहुत हानि थी। अन्त में दूसरा उपाय न देख कर, उन्होंने परसियस को मडूसा के द्वीप का रास्ता बतलादी। रास्ते का पता जान लेने पर, परसियस ने एक बहिन के वह आँख लगा दी और आप मरकरी के पास चला गया।

उसने मरकरी से सब हाल कह सुनाया और उसकी आज्ञा पाकर उसे प्रणाम कर वह मडूसा के द्वीप की ओर चला।

वह बहुत से भयानक द्वीपों में होकर, बहुत से समुद्रों को और अगणित नदी, नदों को पार कर, उड़ता हुआ मडूसा के द्वीप में पहुँचा।

उसे नीचे की ओर देखने का साहस न हुआ। क्योंकि उसे डर था कि कहीं मडूसा का चेहरा देख कर वह पत्थर का न हो जाय। पर मिनेरवा की ढाल ने शीशे का काम किया और उसने उस ढाल से देखा कि तीन राक्षसी सो रही हैं।

परसियस ने मरकरी की दी हुई तलवार म्यान से निकाली और मडूसा के सिर का निशाना लगा वह नीचे झपटा। एक ही हाथ में उसने मडूसा राक्षसी का सिर काट डाला और उसी दम उसका सिर लिये हुए वह आकाश में उड़ गया।
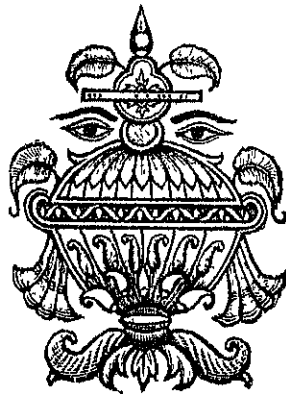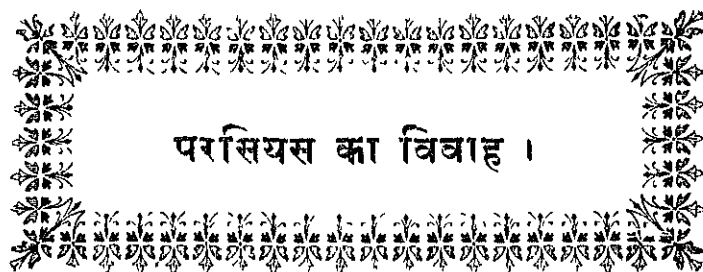
परसियस का विवाह।

ग्रीस के पास एक द्वीप में कैसिओपिया नाम की एक सुन्दरी स्त्री रहती थी। कैसिओपिया ऐसी सुन्दरी और भली स्त्री थी कि देवताओं ने उसे आकाश के तारों के साथ रख दिया था। जब कभी रात स्वच्छ होती है और सब तारे निकले रहते हैं, तब तुम कैसिओपिया की कुर्सी देख सकते हो।

जब कैसिओपिया उस द्वीप में रहती थी, तब एक दिन वह समुद्र के किनारे घूमने गयी। वह बड़ी सुन्दरी थी और उसे अपनी सुन्दरता का घमण्ड भी था। एक दिन जब वह समुद्र के किनारे घूम रही थी तब उसने कहा कि मैं तो समुद्र की अप्सराओं से भी अधिक सुन्दर हूँ।

समुद्र की अप्सराएँ वास्तव में बहुत सुन्दरी थीं और जब उन्हें यह मालूम हुआ कि कैसिओपिया अपने को उनसे भी अधिक सुन्दरी बतलाती है; तब वे बड़ी अप्रसन्न हुईं और उससे बदला लेने के लिये उन्होंने उसके द्वीप में एक समुद्री अजगर को भेजा; जो उस द्वीप में जा कर बड़ा उपद्रव मचाने लगा। इससे सब लोग हताश हो गये।

अन्त में वे सब अपने द्वीप के मन्दिर में गये और ज्योतिषी से इस विपत्ति से बचने का कारण और उपाय पूँछा। ज्योतिषी ने उत्तर दिया.—

ज्योतिषी—"कैसिओपिया के घमण्ड से तुम पर यह आफ़त आयी है। यदि यह अजगर को अपनी बेटी अड्रोमेडा देदे तो समुद्र की अप्सराएँ सन्तुष्ट हो जाँयगी और अजगर फिर तुम्हें न सतावेगा।"

यह सुन कर सब लोग बड़े दुखी हुए। क्योंकि अड्रोमेडा बड़ी सुशील और भली लड़की थी। लोग कहते थे कि वह अपनी माँ कैसिओपिआ से भी बढ़ कर सुन्दरी थी।

जब कैसिओपिया ने ज्योतिषी का बतलाया हुआ उपाय सुना, तब वह मारे दुःख के रोने लगी। वह मन्दिर में दौड़ी गयी और ज्योतिषी के पैरों पर गिर कर कहने लगी:—

कैसिओपिया—(रोते रोते) महाराज! मेरी रक्षा कीजिये। मैं सब तरह आपकी सेवा करने के लिये तैयार हूँ। मेरी प्यारी बेटी को बचाइये। मैं बलि देने को भी तैयार हूँ, कृपा कर आप कोई दूसरा उपाय बतला कर मेरी बेटी को बचाइये।

ज्योतिषी—मैं कुछ नहीं कर सकता। जो तुम अपने नगर को, और अपने भाइयों के नाश को रोका चाहती हो, तो तुम्हें अपनी कन्या, अजगर को बिना विलम्ब दे देनी चाहिये।

कैसिओपिया दुखी हो घर को लौट गयी, और एक कमरे में जा कर, भीतर से उसके दर्वाज़े बन्द कर के वह रोने लगी।

इधर द्वीप के लोग अंड्रोमेडा को समुद्र की ओर ले चले। उन्होंने बेचारी को जंजीरों से बाँध कर, समुद्र के ऊपर वाली एक चट्टान से लटका दिया और वे अजगर के आने की राह देखने लगे।

यद्यपि अंड्रोमेडा अपनी माँ का दुःख कम करने को वीर बनती थी तथापि वास्तव में वह बहुत डर गयी थी। जब जब उसे अजगर का ध्यान आता था; तब तब वह मारे डर के काँपने लगती थी।

थोड़ी ही देर में एकाएक नीले पानी के ऊपर कुछ कुछ काला सा, दूर से दिखलाई पड़ने लगा। धीरे धीरे वह काला पदार्थ आगे बढ़ रहा था। सब लोग जान गये कि यही भयङ्कर अजगर है।

अजगर को पास आया देख, अंड्रोमेडा डर के मारे चिल्ला उठी। सब लोग एकाएक डर गये और सब ने अपनी अपनी आँखों पर हाथ रख लिया। क्योंकि वे यह हाल नहीं देख सके।

एक ही पल में बेचारी अंड्रोमेडा के पास वह अजगर पहुँच कर उसे निगल गया होता, यदि एक आकस्मिक घटना न घटती।

एकाएक आकाश से एक छोटा बादल साँप के ऊपर झपटा। देखते देखते एक तलवार चमक उठी और वह अजगर की गर्दन में जा घुसी।

वह परसियस था जो मडूसा को मार कर उसका सिर लिये हुए उड़ा चला जाता था, उसने दूर से अंड्रोमेडा को चट्टान में लटका हुआ और अजगर को उसके ऊपर झपटता हुआ देख लिया था। वह ज़ोर से उसके ऊपर झपटा और मरकरी की दी हुई तलवार से उसने अजगर के ऊपर वार किया। गर्दन पर तलवार

लगते ही अजगर अंड्रोमेडा का ध्यान छोड़ परसियस के ऊपर चला। थोड़ी देर तक दोनों मे बड़ी लड़ाई हुई। अन्त में परसियस की तलवार अजगर के हृदय मे लगी और वह मर गया। उसकी लाश के टुकड़े समुद्र के जल पर तैरने लगे।

साँप के मर जाने पर परसियस ने अंड्रोमेडा को खोला और वह उसको किनारे पर ले गया। जो लोग किनारे पर खड़े थे वे परसियस की बड़ाई करने लगे और उसे कैसिओपिया के पास ले गये।

अपनी प्यारी बेटी को जीता जागता लौटा देख कैसिओपिया को जो हर्ष हुआ वह नहीं लिखा जा सकता। उसने अंड्रोमेडा के प्राण-रक्षक परसियस को अपने घर ठहराया और उसकी बड़ी ख़ातिर की।

कैसिओपिया ने परसियस के साथ अंड्रोमेडा का विवाह करना चाहा। परसियस भी इससे सहमत हो गया। अंड्रोमेडा के माता पिता विवाह की तैयारी करने लगे। पर उनको एक बूढ़े का डर था जो पहिले ही अंड्रोमेडा के साथ विवाह करना चाहता था। वह बड़ा बलवान् था और उसके कहे में बहुत से सिपाही थे।

विवाह की तैयारी होने लगी। थोड़े ही दिनों मे विवाह का दिन आ गया। जब दोनों का विवाह हो चुका और सब लोग भोजन करने को बैठे, तब वह बूढ़ा आदमी बहुत से सिपाही ले कर वहाँ आया।

उसके आते ही सारे लोग घबड़ा उठे। परसियस ने देखा कि वह एक कुरूप, दुबला पतला और छोटा सा आदमी है और उसके पीछे कुछ हथियारबन्द सिपाही हैं।

बूढ़ा हाथ में तलवार लिये दर्वाज़े पर खड़ा हो गया और बोला :—

बूढ़ा—परसियस! मैं यहाँ इसलिये आया हूँ कि अंड्रोमेडा को, जिसे मैं अपनी स्त्री बनाने का वादा कर चुका हूँ ले जाऊँ, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि तू अड्रोमेडा को चुप चाप मुझे दे दे, नहीं तो मेरे सिपाही तुम सब को मार डालेंगे।

यह सुन सब लोग डर गये और अंड्रोमेडा तो मारे डर के काँपने लगी। परसियस ने अपने दाहिने कंधे पर से एक बेग उतारा और कहा :—

परसियस-महाशय! जिसे आप अपनी स्त्री बनाने को कहते हैं वह तो मेरी स्त्री है। इसलिये आप मुझसे उसको किसी तरह भी नहीं छीन सकते।

यह सुन वह बूढ़ा आगे बढ़ा और उसके सिपाही उसके पीछे चले। पर जब वह ठीक कमरे के बीचो बीच आया, तब वह ठिठक गया और पत्थर के समान खड़ा रहा। क्योंकि परसियस ने उसके सामने मडूसा का सिर कर दिया था और उसको देखते ही वह पत्थर हो गया।

अपने मालिक की ऐसी दशा देख सारे सिपाही भाग गये और सब घर वाले बहुत खुश हुए। थोड़े दिनों बाद परसियस अंड्रोमेडा को ले कर अपने द्वीप को चला गया।

जब परसियस अपने द्वीप में पहुँचा तब पहिले उसने सब हथियार एक जगह रख दिये और मडूसा का सिर कपड़े में लपेट वह अपनी माँ के पास गया।

उसकी माँ अपने बेटे को जीते जागते लौटा देख बड़ी प्रसन्न हुई और जब उसने अंड्रोमेडा को देखा; तब उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

परसियस ने अपनी माँ से सब हाल कहा। वह सब हाल सुन बड़े अचम्भे में आयी। तब उसने अपना सब हाल कहा और यह भी कहा कि दुष्ट राजा ने उसे बड़े बड़े दुःख दिये हैं। परसियस यह सुन बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने प्रतिज्ञा की कि वह राजा से इसका बदला लेगा।

दूसरे दिन सवेरे वह राजा के महल की ओर चला। राजा उसको जीता जागता देख बड़े अचम्भे में आया और बोला :—

राजा—आहा, परसियस तुम अपना काम किये विना ही लौट आये! तुम तो अपनी बहादुरी की बड़ी डींगें हाँकते थे, पर तुमसे कुछ भी न बन पड़ा।

परसियस-महाराज! मैं मडूसा को मार कर आया हूँ और आप की सेवा में उसका सिर लेता आया हूँ।

राजा-मैं यह बात नहीं मान सकता। तुमको चाहिये कि तुम मुझे उसका सिर दिखाओ।

परसियस-महाराज! आप आज्ञा देते हैं इसलिये मैं वह सिर आपको दिखलाता हूँ।

यह कह परसियस ने वह सिर थैले से निकाला और राजा के सामने रख दिया। राजा उसकी ओर देखने लगा, और देखते ही पत्थर का हो गया।

जब लोगों ने सुना कि उस दुष्ट राजा का क्या हुआ, तब वे बड़े प्रसन्न हुए। परसियस ने उनके लिये एक दूसरा राजा चुन लिया जो अच्छी तरह से राज करने लगा।

परसियस ने उन सब देवताओं की जिन्होंने उसकी सहायता की थी बड़ी पूजा की। मडूसा का सिर उसने युद्ध की देवी मिनेरवा को भेंट कर दिया। मिनेरवा इस भेंट से बड़ी प्रसन्न हुई और उस सिर को उसने अपनी ढाल पर लगवा लिया। उस दिन से जब मिनेरवा लड़ने जाती, तब ढाल के ऊपर मडूसा का सिर उसके साथ में रहता और जो उसको देखता वही पत्थर का हो जाता था।

परसियस उसकी माँ और अंड्रोमेडा उसी घर में रहे जिसे उन्हें द्वीप वालों ने दिया था और वे बड़ी प्रसन्नता से अपने दिन बिताने लगा।

---
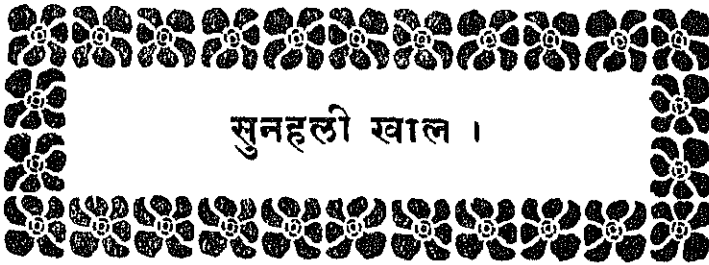
[१]

एक समय ग्रीस में एक राजा रहता था। उसकी रानी का नाम नेफ़िल था। नेफ़िल का अर्थ बादल है और सचमुच उसकी सूरत दूर से ऐसी मालूम पड़ती थी, मानों गर्मी की ऋतु में सन्ध्या के समय का कोमल, ललाई लिये हुए सुनहला बादल चला आ रहा हो।

राजा के एक लड़का और एक लड़की थी। लड़के का नाम फिक्सस और लड़की का नाम हैले था। ये लोग बड़े सुख से रहते थे पर इनको एक बड़ा दुःख यह था कि गर्मी के दिनों में जब बहुत गर्मी पड़ती थी; तब रानी दुबली पड़जाती और अपने घर को छोड़ कर कुछ दिनों के लिये बाहर चली जाती थी। जब बर्सात आती या आकाश में बादल दिखलाई पड़ते, तब वह लौट आती थी। कुछ लोग कहते थे कि वह बादलों की बहिन है और जब वे कहीं चले जाते हैं तब वह भी चली जाती है।

एक बार गर्मी की ऋतु में जब रानी नेफ़िल बादलों के साथ चली गयी थी, तब राजा ने इनो नाम की एक स्त्री से विवाह कर लिया। इनो जादूगरनी थी और उसने राजा पर ऐसा जादू

चलाया कि वह अपनी पहिली स्त्री नेफ़िल को बिलकुल भूल गया।

इनो, फिक्सस और हैले से घृणा करती थी, क्योंकि वे उसकी सौत की सन्तान थे। उसने उन दोनों को मैले कुचैले कपड़े पहिना कर गड़रियों के साथ कर दिया। उनके साथ वे पहाड़ों के नीचे भेड़ चराया करते थे।

वे दोनों भाई बहिन, पहाड़ों की हरियाली पर खेला करते। उन्हें किसी बात की पर्वाह न थी और न वे खाने पीने की रूखी सूखी चीज़ों ही की पर्वाह करते थे। उन्हें केवल यही दुःख था कि उनकी माँ उनके पास न थी।

नेफ़िल को गये बहुत दिन हो गये पर वह न आयी और न आकाश में बादल ही दिखलाई पड़े। सारी बर्सात बीत गयी पर एक बूँद भी पानी न पड़ा। सारे खेत सूरज की गर्मी से झुलस गये और फसल मारी गयी। लोग भूखों मरने लगे।

यह देख राजा ने एक मन्दिर में, जो दूर था, कुछ लोग भेजे और उनके द्वारा वहाँ के ज्योतिषियों से पानी बरसने का उपाय पुँछवाया। यह देख रानी इनो ने उन लोगों को कुछ रुपये दिये और उनसे कहा कि वे राजा से कह दें कि ज्योतिषी ने कहा है कि पानी तभी बर्सेगा जब फिक्सस और हैले मार डाले जायँगे। वे लोग भले आदमी न थे और इसलिये लालच में पड़, वे यह कहने पर राज़ी हो गये।

थोड़े दिनों में वे दुष्ट ज्योतिषी के पास बिना गये ही लौट आये और उन्होंने राजा से कहा कि पानी तभी बरसेगा जब फिक्सस और हैले मार डाले जायँगे। राजा, इनो के जादू से ऐसा मूर्ख हो गया था कि, उसे उन दोनों के मारे जाने का कुछ

भी रज न हुआ और उसने उन दोनों के बलि दिये जाने की आज्ञा देदी।

जब नैफ़िल ने यह हाल सुना तब वह बहुत दुखी हुई और देवताओं के पास सहायता माँगने गयी। देवताओं ने उसे सहायता देने का वचन दिया।

जो दिन फ्रिक्सस और हैले के बलि के लिये निश्चित् किया गया था, वह आ पहुँचा और निर्दोष बालक और बालिका फूलों से सजा कर बलि-पीठ की ओर ले जाये गये। जब वे उस जगह के पास पहुँचे, तब एकाएक वहाँ पर तेज़ी के साथ हवा में उड़ता हुआ एक सुनहला मेढ़ा आया। जैसे ही वह दोनों के पास पहुँचा वैसे ही दोनों कूद कर उस पर चढ़ गये और वह उन्हें पीठ पर लिये हुए बड़ी तेज़ी के साथ हवा में उड़ गया।

मेढ़ा दोनों को पीठ पर लिये हुए समुद्र और पृथ्वी पर उड़ता हुआ चला। उसकी तेज़ी पल पल में बढ़ती जाती थी। अन्त में बेचारी हैले थक गयी और जब वह एक समुद्र के सकरे भाग के ऊपर पहुँची तब वह मेढ़े की पीठ पर से उसमें गिर गयी और मर गयी। उस दिन से वह समुद्र का सकरा भाग हैलेसपांट* के नाम से विख्यात है।

फ्रिक्सस उस मेढ़े की पीठ पर चढ़ा रहा। वह उसे एक द्वीप में ले गया जो ग्रीस से बहुत दूर था। उस द्वीप के राजा ने उसे अपने यहाँ बड़ी ख़ातिरदारी से रखा और अपनी लड़की

* हैलेसपांट जल-डमरूमध्य है, जो ईजन-सी और मारमोरा-सी के बीच में है। यह योरोप और एशिया के बीच में है।

के साथ उसका विवाह कर दिया। वह सुनहला मेढ़ा इतनी मेह-नत करने के कारण बहुत जल्द मर गया। फ्रिक्सस ने उसकी खाल जंगल में रखवा दी और उसकी रखवाली करने के लिये एक भयङ्कर राक्षस वहाँ पर बैठा दिया।

वहाँ के राजा के मरने पर फ्रिक्सस वहाँ की गद्दी पर बैठा। थोड़े दिनों में वह भी मर गया और वह सुनहले मेंढ़े की खाल ही सारे द्वीप में सब से क़ीमती मानी जाने लगी।

[२]

फ्रिक्सस की मृत्यु के बहुत दिनों बाद ग्रीस मे एक राजा राज्य करता था, जिसका नाम ईसन था। उसके एक पुत्र था जिसका नाम जेसन था। राजा ईसन भोला और कमज़ोर राजा था। एक दिन उसका भाई बहुत सी सेना लेकर आया और उसने ईसन को राज्य से निकाल दिया। वह ग्रीस में राज्य करने लगा। एक दिन एक ज्योतिषी ने उससे कहा कि—"तेरे राज्य का वही नाश करेगा जो एक जूता पहिन कर आवेगा।"

राजा ईसन अपने छोटे से पुत्र जैसन को लेकर जङ्गल में चला गया। वहाँ वह ग़रीबों की तरह रहने लगा। किन्तु उसने जैसन को राजकुमारों की तरह शिक्षा दी। उस समय सारे ग्रीस में शिरन नाम का एक सिनटार* (Centaur.) सब से बढ़ कर बुद्धिमान् गिना जाता था। वह बड़ा बुद्धिमान् और भला था। बड़े बड़े राजे अपने लड़के उसके पास पढ़ाने के लिये भेजा करते

* सिनटर (centaur)। ग्रीक लोग कहा करते थे कि सिनटार एक प्रकार के आदमी हैं जिनके शरीर के नीचे का भाग तो घोड़े की तरह होता है और ऊपर का (कन्धों को लगा, उससे ऊपर) मनुष्यों की तरह। वे बड़े बुद्धिमान होते हैं।

थे। ईसान ने भी अपने पुत्र को उसके पास पढ़ाने को भेजा।

जैसन शिरन की गुफा में, जो पहाड़ की चोटी पर थी, गया; और वहाँ वह तब तक रहा जब तक कि वह जवान न हो गया। शिरन ने उसे शिकार खेलने, तलवार चलाने, बरछी चलाने, सच बोलने और दयावान् होने की शिक्षा दी।

जब जैसन बड़ा होगया और जब उसे वे सब विद्याएँ आगयीं जो एक राजकुमार में होनी चाहिये, तब शिरन ने उससे कहा कि वह एक राजा का पुत्र है और उसके चाचा ने उसके पिता का राज्य छीन लिया है और उसे चाहिये कि वह अपने चाचा के पास जाकर अपने राज्य को लेले।

जब जैसन अपने गुरु से विदा होने लगा तब उसका गुरु शिरन उसे पहुँचाने के लिये पहाड़ के नीचे तक आया। जब दोनों गुरु शिष्य विदा होने लगे तब गुरु ने कहा:—

शिरन—प्यारे शिष्य जैसन! जो कुछ मैंने तुम्हें सिखलाया है उसे भूल मत जाना। सदा सच बोलना, और सदा भलाई और दया के काम करना। जब जब कोई दीन दुखिया तुमसे सहायता माँगे, तब तब उसे सहायता देने में तुम न चूकना।

जैसन अपने गुरु को प्रणाम कर विदा हुआ। जब वह एक झरने के किनारे आया, तब उसने देखा कि झरने में एकाएक पानी बढ़ आया है और एक बूढ़ी स्त्री पार जाने में असमर्थ हो किनारे पर खड़ी है। जैसन को अपने गुरु की आज्ञा याद आयी। वह उस बुढ़िया के पास गया और उससे कहा कि यदि वह कहे तो वह उसे पार ले चलने को तैयार है। बुढ़िया ख़ुशी से राजी हो गयी। जैसन उसे अपने कन्धे पर बैठा कर पार ले

चला। पानी बड़ी तेजी से वह रहा था। उसको अपने ऊपर भारी बोझ लेकर, पार जाने में बड़ी कठिनता हुई; पर अन्त मे वह पार पहुँच ही गया। जब उसने उस स्त्री को अपने कन्धे से उतारा तब उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि जिसको उसने एक दीन बुढ़िया समझा था वह देवी जूनो थी। जैसन को सकपकाया देख देवी जूनो ने कहाः—

देवी जूनो–युवक! तुम बड़े वीर और भले हो। तुमने एक बुढ़िया के साथ जो भलाई की है उसका तुम्हें बदला मिलेगा।

इतना कह कर वह अन्तर्द्धान हो गयी। जैसन हक्का बक्का हो खड़ा रहा।

थोड़ी देर में उसके हवास ठिकाने हुए। जब वह आगे चलने की तैयारी करने लगा, तब उसे मालूम हुआ कि तैरते समय उसका एक जूता नदी में गिर पड़ा है। इसलिये वह एक ही पाँव में जूता पहिने आगे बढ़ा। अन्त में यह अपने चाचा के महल में पहुँच गया। लोग उसे उसके चाचा के पास ले गये।

भतीजे को देख कर, वह डर गया, पर जब उसने उसके एक पैर में जूता और उसका दूसरा पैर नङ्गा देखा; तब तो उसकी घबड़ाहट का ठिकाना न रहा। क्योंकि उसे वह भविष्यद्वाणी याद आयी जो एक ज्योतिषी ने कह रखी थी और जिसे हम इस कथा के आरम्भ में लिख चुके हैं।

यह सब होने पर भी उस कपटी ने अपनी घबड़ाहट छिपायी और अपने को जैसन को दिखाने के लिये, प्रसन्न बना लिया। उसने जैसन की दिखौआ बड़ी ख़ातिर की और ख़ुद उसके

साथ भोजन करने बैठा। भोजन करते करते उसने बहुत से पुराने वीरों की कहानियाँ कहीं और अन्त में वह बोला:—

जैसन का चाचा-बड़े दुःख की बात है कि पुराने वीरता के दिन बीत गये। वैसे वीर हम लोगों के समय में नहीं हैं।

जैसन-क्षमा कीजिये। मैं आपकी बात नहीं मान सकता। अब भी बहुत से ऐसे वीर पड़े है जिन्हें अपनी वीरता दिखाने का समय ही नहीं मिलता।

यह सुन कर जैसन का चाचा ज़ोर से हँसा और बोला—तुमने सुनहली खाल की कहानी सुनी होगी। मैं किसी ऐसे वीर को बहुत दिनों से ढूँढ़ रहा हूँ जो उसे यहाँ ले आवे। वह हमे बहुत धनी बना देगी और दूर दूर हमारा नाम हो जायगा।

यह कह कर, उसने फ्रिक्सस, हैले और सुनहली खाल की कहानी जैसन को सुनायी। जब वह अपनी कहानी पूरी कर चुका; तब जैसन ने ज़ोर से कहा:—

जैसन—चाचा! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपको साबित कर दूँगा कि अभी वीर लोग दुनियाँ में मौजूद हैं। मैं या तो उस सुनहली खाल को ले आऊँगा और या उसीके लाने के उद्योग में मर जाऊँगा।

यह सुन कर, उसका चाचा बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह तो यही चाहता था कि उसे किसी ऐसे काम पर भेजे जहाँ से उसके लौटने की आशा न रहे। पर उसने अपनी प्रसन्नता प्रकट न की।

जैसन इस यात्रा की तैयारियाँ करने लगा। उसने एक बढ़िया और मज़बूत जहाज़ बनवाया जिसका नाम उसने

"आरगो" रखा । "आरगो" शब्द का अर्थ "तेज़" है । उसके एक सिरे पर ओक लकड़ी का बनाया हुआ आदमी का एक सिर था, जो जूनो ने भेजा था । वह एक विचित्र वस्तु थी । क्योंकि जब कभी उससे कोई बात पूछी जाती तो वह सिर उसका ठीक ठीक उत्तर दे देता था ।

जब जहाज़ बन कर तैयार हो गया तब जैसन ने अपने सहपाठियों को सहायता के लिये बुलाया । सभी सहपाठी आये । वे लोग "आरगोनाट्स" कहलाते थे । क्योंकि वे "आरगो" नाम के जहाज पर सवार थे ।

जब उसके सब साथी आ गये; तब जैसन अपने साथियों को ले कर चला । रास्ते में उसको बड़ी बड़ी विचित्र वस्तुएँ मिलीं । अन्त में वे सब उस द्वीप में जा पहुंचे जहाँ वह विचित्र सुनहली खाल थी ।

सुनहली खाल ।

[३]

दूसरे दिन सबेरे सब आरगोनाट्स उस द्वीप के राजा के सामने ले जाये गये। राजा के एक लड़का और एक लड़की थी। लड़का छोटा था और राजा उसे बहुत प्यार करता था। लड़की सयानी थी। उसका नाम मिडिया था। वह थोड़ा बहुत जादू भी जानती थी।

जिस समय आरगोनाट्स उसके सामने पहुँचे, उस समय छोटा लड़का उसके पैरों के पास बैठा था और मिडिया उसके दहिनी ओर बैठी थी। राजा ने जैसन से उसके आने का कारण पूछा। जैसन ने उत्तर दिया:—

जैसन—मैं ग्रीस का राजकुमार जैसन हूँ। मैं उस सुनहली खाल को, जिस पर फ़िक्सस और हैले चढ़ कर इस द्वीप में आये थे, लेने आया हूँ।

यह सुन कर राजा हँसा और बोला:—

राजा-निस्सन्देह तुम एक बड़ी वीरता का काम अपने सिर ले कर यहाँ आये हो; क्योंकि वही उसको लेजा सकता है जो उन तीनों कामों को जिन्हें मैंने विचार रखा है ठीक ठीक पूरा कर सके ।

जैसन-महाराज ! मैं उन कामों को सुनना चाहता हूँ ।

राजा-पहिला काम यह है कि तुम उन दो भयानक बैलों को हल में जोतो जिनके मुँह से आग निकलती है और उनसे चार एकड़ ज़मीन जुतवाओ । दूसरा काम यह है कि कुछ राक्षसों के दाँतो को बोओ और जो हथियारबन्द आदमी उनसे निकलें, उन्हें जीतो; और तीसरा काम उस राक्षस को मारने का है जो दिन और रात, कभी नहीं सोता और सुनहली खाल की रखवाली करता है । जब तुम ये तीनों काम कर सकोगे; तब तुम उस खाल को ग्रीस ले जाने पाओगे । अब तुम जा सकते हो ।

जैसन अपने साथियों को साथ ले कर दर्बार से लौट आया । यद्यपि वह देखने में कुछ निरुत्साहित नहीं मालूम देता था, तथापि उसका उत्साह अब वैसा न रह गया था जैसा कि पहले था । पहिले कहा जा चुका है कि उस द्वीप के राजा की लड़की मिडिया एक जादूगरनी थी । जब उसने जैसन की दशा देखी, तब उसे जैसन पर दया आयी । उसने जैसन को सहायता देने का इरादा पक्का किया और इसी लिये वह आरगो की ओर चली ।

सो जब जैसन अपने जहाज़ पर आया, तब उसने मिडिया को बैठा पाया । मिडिया ने कहा कि वह जैसन को सहायता देने के लिये तैयार है जिससे वह उन भयानक बैलों को जोत ले ।

जिससे हथियार बन्द आदमियों को जीत ले और उस कभी न सोने वाले राक्षस को मार डाले जो सुनहली खाल की रखवाली कर रहा है। उसने यह भी कहा कि वह सहायता तभी करेगी जब जैसन उसे अपने साथ ग्रीस ले चलने और अपनी स्त्री बनाने को तैयार हो। जैसन इस बात पर राज़ी हो गया और मिडिया ने उसे कुछ ओषधियाँ दीं जिनसे वह सब विपत्तियों से बच सके।

इस कथा के पढ़ने वाले आश्चर्य करेंगे कि मिडिया अपने पिता, माता, भाइ और सब लोगों को, जो कि उससे स्नेह करते थे, छोड़ कर अनजान युवा जैसन के साथ ग्रीस जाने को क्यों तयार हुई? सचमुच यह एक आश्चर्य की बात है। पर असल बात यह थी कि देवी जूनो सहायता करने का वादा नहीं भूली थीं। उसने मिडिया के हृदय पर ऐसा प्रभाव जमाया कि वह जैसन की सहायता करने को तैयार हो गयी थी।

दूसरे दिन सबेरे जैसन उस मैदान की ओर चला; जहाँ वह दो काम करने वाला था। नगर के बहुत से आदमी तमाशा देखने के लिये गये। राजा भी उस मैदान के एक किनारे एक ऊँची कुर्सी पर जा बैठा। उसकी बग़ल में मिडिया और उसका छोटा लडका बैठा था।

जैसे ही जैसन उस मैदान में घुसा वैसे ही उसने देखा कि दो भयङ्कर बैल उसकी ओर दौड़ते चले आ रहे हैं। वे बड़े भारी थे, उनके खुर पीतल के और सींग नुकीले ईसपात के थे। उन के दौड़ने से धरती खुदी जाती थी। जब वे साँस लेते थे तब उनके नथुनों से आग की लपटें निकलती थीं। उस आग की गर्मी से मैदान की सारी हवा गर्म हो रही थी। पर मिडिया की दी हुई ओषधि के प्रभाव से जैसन को कुछ भी गर्मी न मालूम हुई। वह निडर हो उन बैलों के पास चला गया और उनके

सींग पकड़ कर उसने ज़ोर से उनके सिर दबाये। जब दोनों सिर झुक गये तब उसने जल्दी से उनकी गर्दन पर हल खसका दिया। अब तो वे बैल बकरी की तरह सीधे हो गये और जैसन ने थोड़ी ही देर में वह चार एकड़ ज़मीन जोत डाली।

इसके बाद ही उसने जोती हुई धरती में राक्षसों के दाँत बोये। दाँत के बोने के साथ ही पल भर में धरती से बहुत से भयङ्कर हथियारबन्द राक्षस निकले और जैसन की ओर झपटे। जैसन ने उस समय एक बड़ा सा पत्थर उठा कर उस सेना के बीच में फेंक दिया। पत्थर गिरते ही हर एक ने सोचा कि उसके पास वाले ने यह पत्थर फेंका है, इसलिये वे जैसन की ओर न जा कर, आपस ही में लड मरे। थोड़ी ही देर में उनकी लाशें मैदान में दिखलाई पड़ने लगी।

राजा को छोड कर और सब लोग जैसन पर प्रसन्न हुए। किन्तु राजा ने सोचा कि अवश्य ही जादू की सहायता से वह यह काम कर सका है। इस द्वीप में उस समय मिडिया के सिवाय और कोई जादूगर नहीं था। इसलिये उसको पूरा पूरा विश्वास हो गया कि मिडिया ने उसकी सहायता की है। सो जब जैसन ने उससे तीसरे काम करने की आज्ञा माँगी, तब उसने कहा कि—"आज तुम बहुत काम कर चुके हो अब तीसरा काम कल करना।"

पर मिडिया पिता के मन की बात समझ गयी और उसने इकेले में उससे कहा कि उसे उचित है कि वह रात ही में राक्षस को मार कर सबेरे ग्रीस को चल दे।

जैसन ने मिडिया की बात मान ली। रात होते ही वह उस जंगल की ओर चला जिसमें वह सोने की खाल लटक रही थी।

उसने दूर से देखा कि जगल मे एक विचित्र प्रकार की रोशनी हो रही है। वह समझ गया कि अवश्य ही यह रोशनी उस सुनहली खाल की है। थोडी दूर चल कर, उसने देखा कि एक डरावना राक्षस भी वहाँ बैठा है। जैसन ने मिडिया की दी हुई एक ओषधि दूर से उसकी आँख में फेंको। थोडी ही देर मे राक्षस सो गया। राक्षस को सोता देख जैसन ने उसका सिर काट डाला और वह सुनहली खाल पेड़ पर से उतार, "आरगो" की ओर चला।

जहाज़ तैयार था। मिडिया और आरगोनट्स उसकी राह देख रहे थे। उसके पहुँचते ही जहाज़ का लंगर उठा लिया गया और जहाज़ ग्रीस की ओर चला।

थोडे दिनों बाद, वे ग्रीस पहुँच गये। जैसन ने अपने चाचा को गद्दी से उतार कर, राज के बाहर कर दिया और अपने पिता को फिर से गद्दी पर बैठाया। तब सब लोग सुख के साथ रहने लगे।

——:o:——

दो गवैये और एक मूर्ख राजा।
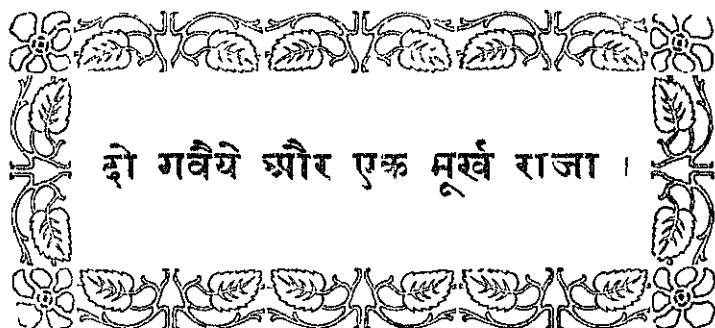
देवता पैन बड़ा अच्छा गवैया था और लोगों ने उसकी इतनी बड़ाई की कि वह अपने को संसार में सब से बड़ा गवैया समझने लगा। पैन की बड़ाई करने वालों में राजा मिडास मुख्य था।

अन्त में पैन को इतना घमण्ड हुआ कि उसने देवताओं के गवैये अपालो को गाने के लिये ललकारा। अपालो सच-मुच बड़ा नामी गवैया था, तो भी उसने पैन की प्रार्थना स्वीकार की।

राजा मिडास के महल के पास एक पहाड़ी पर दोनों गवैयों का सामना होना निश्चित हुआ। पहाड़ों का राजा पञ्च बदा गया। वह एक बड़ा बूढ़ा मनुष्य था। उसके बाल सफ़ेद थे और आँखें बड़ी बड़ी थीं। उसकी सफ़ेद डाढ़ी पेट तक लटकती थी।

पहाड़ों का राजा एक ऊँचे मञ्च पर बैठा। उसकी दाहिनी तरफ़ राजा मिडास भड़कीले कपड़े पहिन कर बैठा। दोनों के

आस पास दूसरे दर्शक बैठे। उनमें जङ्गल और नदियों की अप्सरायें ही बहुत थीं। उन सब के सामने पैन बकरे की खाल पहिने और हाथ में नरकल की बाँसुरी लिये एक ओर खड़ा था। उसके सामने देवता अपालो खड़ा था। उसके सुन्दर बाल सूर्य की किरनों की तरह चमक रहे थे। उसकी आँखें आकाश के तारों की तरह चमक रही थीं। वह एक सुनहला लबादा पहिने हुए था और उसके हाथ में एक दिव्य बीन थी।

पहिले पैन ने गाना आरम्भ किया। चारों ओर एकाएक सन्नाटा छा गया। पैन ने अपनी बाँसुरी ओठों से लगायी। उसका गाना मिडास राजा को छोड़ और किसी को उतना पसन्द न आया। गाना पूरा होने पर, राजा ने उसे अपने पास बैठा लिया।

अब अपालो अपनी बीन ले कर आगे बढ़ा। उसने अपना लबादा उतार कर फेंक दिया। बीन के तारों पर अपालो की सुन्दर अंगुलियाँ नाचने लगीं। ऐसा मालूम पड़ने लगा कि मानों पृथ्वी आकाश सभी उस सुन्दर बीन के स्वरों से हिल रहे हैं। ऐसा मालूम होने लगा कि ओलिम्पस पहाड़ पर हज़ारों अप्सरायें एक साथ मिल कर बाजा बजा रही हैं। सब लोग इतने प्रसन्न हुए कि उनकी आँखों से प्रसन्नता के आँसू बहने लगे। अपालो ने अपनी बीन में ऐसे ऐसे राग निकाले कि कभी तो लोग रोने लगते और कभी ज़ोर से हँसने लगते थे। मारे हर्ष के सब कोई, यहाँ तक कि स्वयं पैन-थोड़ी देर के लिये, पत्थर की तरह जहाँ के तहाँ बैठे रह गये।

जब अपालो अपना गाना पूरा कर चुका, तब सब कोई उसकी बड़ाई करने लगे। सब ने उसे बढ़िया गवैया माना, पर

मूर्ख राजा मिडास बार बार उसकी बुराई करने लगा । इससे अपालो ने उस पर क्रुद्ध हो, उसके कान गधे जैसे कर दिये ।

यह देख राजा अपने महल में भाग गया और वहाँ उसने एक दर्ज़ी बुलवाया । राजा ने उसे बड़ी बड़ी क़समें खिलायीं कि वह उसकी गुप्त बात किसी से न कहे । तब उसने उसे अपने गधों के जैसे कान दिखलाये और एक ऐसी टोपी बनाने को कहा जिससे उसके वे दोनों भद्दे कान छिप जायँ ।

थोड़े ही दिनों में दर्ज़ी ने वह टोपी राजा को बनाकर लादी । राजा ने उसे धमकाया कि "यदि यह बात तू किसी से कहेगा तो मैं तुझे मार डालूँगा ।" दर्ज़ी डर कर महल से चल दिया पर उसके पेट में वह बात न पच सकी । वह बड़े असमञ्जस में पड़ा । रात में उसे नींद भी न आयी ।

अन्त में, उसे उस भेद का छिपाना कठिन हो गया । वह आधी रात को एक फावड़ा ले कर घर से चला । जब वह शहर से बहुत दूर निकल गया, तब वह एक मैदान में पहुँचा । वहाँ उसने एक गहरा गढ़ा खोदा और उसके मुँह के पास मुँह लगा कर कहा:—

"राजा मिडास के गधे जैसे कान ।"

इतना कह कर उसने झटपट गढ़े को फिर भर दिया और घर लौट आया ।

थोड़े ही दिन बाद वहाँ एक पेड़ निकल आया । जब हवा चलती तब उसके पत्ते खड़ खड़ाने लगते और उस खड़ खड़ाहट से यह विचित्र आवाज़ निकलती:—

"राजा मिडास के गधे जैसे कान।"

जब राजा की प्रजा के लोग उधर से निकलते, तब उन्हें यह विचित्र आवाज़ सुनाई देती थी:—

"राजा मिडास के गधे जैसे कान।"

धीरे धीरे यह बात सब को मालूम हो गयी और लोग जान गये कि अपालो ने राजा को कैसी सज़ा दी है।

एक दिन जब ग्रीस का युवा राजा ईजियस एक गाँव में हो कर कहीं जा रहा था, तब उसने एक स्त्री को देखा। उसने उसके साथ विवाह कर लिया, और थोड़े ही दिनों बाद उसके एक लड़का पैदा हुआ; जिसका नाम थिसिअस रखा गया।

जब वह बालक कई महीने का हुआ, तब राजा ईजियस अपनी राजधानी एथेंस को लौटने लगा। उसने एक गढ़ा खोद कर, उस गढ़े में अपनी तलवार और जूते रखे और उस गढ़े के मुँह पर एक भारी पत्थर रख दिया। फिर उसने अपनी स्त्री से कहा:—

राजा ईजियस—जब हमारा पुत्र ईश्वर की कृपा से बड़ा हो जाय और इस पत्थर को उठा सके तब तुम उससे तलवार और जूते निकालने को कहना और जब वह इन्हें निकाल ले; तब उसे एथेंस में मेरे पास भेज देना। मैं, वहाँ, उसे अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाऊँगा।

जिस समय थिसिअस पैदा हुआ उसी समय क्रीट के राजा मिनोस के भी एक पुत्र पैदा हुआ। मिनोस अपने पुत्र को बहुत प्यार करता था और उसने उसे सब विद्याओं की शिक्षा दी।

ग्रीस में हर साल एक मेला हुआ करता था, जिसमे ग्रीस और आस पास के द्वीपों के निवासी आकर अपनी अपनी विद्या और कला दिखलाया करतेथे। जब क्रीट का राजकुमार बड़ा हो गया, तब राजा मिनोस ने उसे भी उस मेले में भेजा।

वह राजकुमार बड़ा सुशील, उदार, वीर और बहुत सी विद्याओं में निपुण था। इसलिये ग्रीक लोग उसे प्यार करने लगे। किन्तु राजा ईजियस उससे डाह करता था। जब वह ग्रीस से लौट रहा था, तब राजा ने कुछ आदमी उसके पीछे भेज कर उसे मरवा डाला।

इससे ग्रीक लोग अपने राजा पर बहुत अप्रसन्न हुए। उन्होंने बड़ा आन्दोलन मचाया; पर उस समय एक ऐसी घटना हो गयी, जिससे सब कोई इस निष्ठुर कार्य को थोड़े दिनों के लिये भूल गये।

थिसियस उस समय बड़ा हो गया था। वह बड़ा बली और वीर हुआ। एक दिन उसकी माँ उसे उस जगह ले गयी जहाँ ईजियस की तलवार और जूते रखे थे। उसने थिसियस से कहाः—

थिसियस की माँ-यहाँ पर तेरे पिता की तलवार और जूते रखे हैं। तेरा पिता एथेंस का प्रसिद्ध राजा है। यदि तू इस भारी पत्थर को उठा सके और इसके नीचे रखी हुई वस्तुओं को ले सके, तो तेरा पिता तुझे ग्रीस के विशाल राज्य का उत्तराधिकारी बना देगा।

यह सुन थिसियस ने बड़ी सरलता से उस पत्थर को उठा लिया और उसके नीचे रखी हुई तलवार और जूते ले, वह एथेंस की ओर चला।

एथेंस का राह बड़ा भयानक था। राह में सैकड़ों साहसी डाँकू लगते थे। भयानक दैत्यों ने तरह तरह के जादू रास्ते में बना रखे थे। हिंसक पशुओं से रास्ता भरा था। पग पग पर विपत्ति और प्राण जाने का भय था। पर साहसी युवक थिसियस ने उन विपत्तियों की कुछ भी परवाह न की। उसने प्रायः सारे डाँकुओं को मार डाला। दैत्यों के जादू व्यर्थ कर दिये और हिंसक पशुओं को भी अपनी पैनी तलवार से काट डाला।

अन्त में वह सब विपत्तियों से बच कर, अपने पिता के महल के दर्वाज़े पर जा पहुँचा। अपने वीर पुत्र को देख राजा ईजियस बहुत प्रसन्न हुआ। सारे नगर में आनन्द छा गया। यही कारण था कि ग्रीक लोग क्रीट के राजकुमार की हत्या की बात को भूल गये थे।

उधर राजा मिनोस अपने प्यारे पुत्र की राह देख रहा था। कुछ राहगीरों ने उसके पुत्र की लाश पायी और उसको पहिचान कर वे उसे राजा मिनोस के पास ले गये। जब उसने अपने पुत्र की लाश देखी; तब उसे बड़ा दुःख हुआ। साथ ही साथ हत्यारे का पता पाकर, उसे बड़ा क्रोध आया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह ग्रीस के राजा से अवश्य इसका बदला लेगा।

एक दिन एथेंस का राजा ख़ुशी ख़ुशी अपने बाग़ में टहल रहा था। उसी समय एक प्यादा उसके पास दौड़ता दौड़ता आया और बोला कि—क्रीट का राजा मिनोस एक भारी सेना ले कर अपने पुत्र की हत्या का बदला लेने आ रहा है। यह सुन कर सब लोग लड़ाई की तैयारी करने लगे और सब नाच तमाशे बन्द कर दिये गये।

——:o:——

निर्दयी राजा को दण्ड ।

क्रीट का राजा मिनोस अपनी भारी सेना लेकर एथेंस के पास आ गया। एथेंस-वासियों ने नगर के फाटक बन्द कर लिये; इसलिये राजा मिनोस ने एथेन्स पर घेरा डाला।

राजा मिनोस के पास बहुत सेना थी और उसके साथ सेना के भोजन के लिये बहुत सी रसद भी थी, और वह आवश्यकता होने पर और रसद भी मँगा सकता था, पर एथेंस वालों के पास बहुत कम रसद थी और वे बाहर से मँगा भी नहीं सकते थे। इसलिये कुछ दिनों बाद एथेंस-वासी भूखों मरने लगे।

अन्त में ओकों ने मन्दिर में जाकर, ज्योतिषी से सम्मति ली। ज्योतिषी ने कहा कि तुम्हें वही करना चाहिये जो कुछ राजा मिनोस कहे। इस पर राजा मिनोस के पास एक दूत भेजा गया।

यद्यपि राजा मिनोस एक वीर और उदार राजा था; तथापि जब कभी उसे अपने प्यारे पुत्र की याद आती, तब वह मारे

शोक और क्रोध के पागल सा हो जाता था। जब एथेंस का राजदूत उसके पास गया, तब उसने उत्तर दियाः—

राजा मिनोस—तुम लोगों ने मेरे निर्दोष प्यारे पुत्र की हत्या कर डाली है। तुम लोग क्षमा के योग्य नहीं हो। तो भी मैं तुमसे उतना कड़ा बदला न लूंगा। तुम लोगों को हर साल सात युवक और सात युवती क्रीट को भेजनी पड़ेंगी। मैं उन सब को भयङ्कर दैत्य मिनोटार को खाने के लिये दे दिया करूँगा। मिनोटार को डिडालस ने भूलभुलैयों में बन्द कर रखा है। मैं तुम्हारे लिये इतनी ही रियायत कर सकता हूँ।

जब राजदूत राजा मिनोस के पास से लौटा; तब उसका उत्तर सुन एथेंस मे बड़ा शोक फैला। अन्त में एक ने राय देते हुए कहाः—

"सचमुच यही बहुत है। सात युवक और सात युवतियों का हर साल मरना, एथेंस के एक दम नष्ट हो जाने की अपेक्षा बहुत अच्छा है।"

अन्त मे सारे युवक और युवती एक जगह इकट्ठे किये गये। वहाँ पर काली और सफ़ेद गेंदें रखी थीं, उनमें से हर एक से उन गेंदों में से एक गेंद उठाने को कहा गया। जिसने काली गेंद उठायी उसीको क्रीट को भेजना निश्चित किया गया। वे चौदहों प्राणी राजा मिनोस को दे दिये गये; जिन्हें लेकर वह क्रीट को लौट गया।

इसी तरह हर साल चौदह अभागे जन क्रीट को मिनोटार के भोजन के लिये भेजे जाने लगे। पर जब चौथी बार क्रीट

भेजने के लिये लोगों का चुनाव आरम्भ हुआ; तब युवा राजकुमार थिसियस ने कहा कि अब की बेर वह भी मिनोटार के भोजन के लिये क्रीट जायगा। वहाँ या तो वह मरेगा और या अपने नगर को इस भयङ्कर दण्ड से छुड़ावेगा।

राजा ईजियस ने राजकुमार थिसियस को बहुत कुछ समझाया पर वह किसी तरह भी न माना और मृत्यु के मुँह में जाने के लिये तैयार हो गया।

एरियाडन का डोरा।

जब सब के विदा होने का दिन निकट आया, तब सब लोग बन्दर की ओर चले। वहाँ एक जहाज़ खड़ा था जिस पर शोक-सूचक एक काला झण्डा फहरा रहा था।

राजा ईजियस भी अपने प्यारे पुत्र को सदा के लिये विदा करने के लिये बन्दर तक गया। वह बुरी तरह रो रहा था। लोग उसे थामें हुए थे। वह अपने उस निष्ठुर काम के लिये बार बार पछुता रहा था जिसके बदले में उसका प्यारा पुत्र मरने को जा रहा था।

थिसियस ने पिता को सान्त्वना देते देते कहाः—

थिसियस—पिता! मैं बलवान् और युवक हूँ। जब मैं लड़का ही था तभी मैंने कितने ही दैत्यों और राक्षसों को मार डाला था। आप मत घबड़ाइये। मैं शीघ्र ही मिनोटार को मार कर, आपकी सेवा में लौट आऊँगा।

पर राजा को इससे कुछ भी ढाढ़स न बँधा, और देखते देखते जहाज़ चल दिया।

अन्त में वह जहाज़ क्रीट के द्वीप में जा पहुँचा। वे चौदहो अभागे जीवधारी मिनोस के पास पहुँचाये गये।

जब ये सुन्दर युवक और युवती मारे भय के काँपते और रोते उस राजा के पास पहुँचे, तब सब लोग जो सभा में उपस्थित थे, एक बार दया से पसीज गये। पर राजा मिनोस को उन पर कुछ भी दया न आयी।

एकाएक राजा की निगाह राजकुमार थिसियस पर पड़ी। उसने पूँछा :—

राजा मिनोस—क्या तुम लोगों में एथेंस का युवक राजकुमार थिसियस भी है?

थिसियस ने घमण्ड के साथ कहा—हाँ, महाराज! मैं ही वह थिसियस हूँ और मैं आपसे एक बात की आज्ञा माँगता हूँ। वह यह कि आज रात को मुझे अकेले भूलभुलैयों में जाने दीजिये। सबेरे मेरे साथी वहाँ आजाँयगे।

राजा मिनोस—राजकुमार अकेला ही मरना चाहता है। उसे अकेले ही मरने दो। पर इसको लेबीरिन्थ (भूल-भुलैयों) तक पहुँचाने कौन आयगा?

यह सुन सब चुप हो गये। पर राजा मिनोस की कन्या एरियाडन ने जाना स्वीकार किया।

रात को एरियाडन थिसियस को लेकर भूलभुलैयों के दर्वाज़े पर गयी। वहाँ उसने राजकुमार से कहा :—

एरियाडन—राजकुमार थिसियस! मैं तुम्हारे लिये बड़ी दुःखी हूँ। तुम एक वीर और बलवान् युवक मालूम पड़ते हो। तुम उस दैत्य को आज मार क्यों नहीं डालते?

थिसियस–राजकुमारी ! मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। मेरी तलवार मिनोटार का सिर काट सकती है। पर लोग कहते है कि इसमें जा कर, आदमी लौट नहीं सकता।

एरियाडन–राजकुमार ! मैं तुम्हें यह मजबूत डोरा देती हूँ। तुम इसका एक सिरा तो दर्वाज़े से बांध देना और दूसरा अपने हाथ में पकडे रहना। जब तुम मिनोटार को मार डालना तब इसीके सहारे बाहर लौट आना।

इतना कह कर, उसने थिसियस को मज़बूत डोरे की एक पिण्डी दी। थिसियस को वह पिण्डी पा कर बड़ी प्रसन्नता हुई। राज-कुमारी को धन्यवाद दे कर, वह दर्वाज़े से डोरे का एक कोना बाँध बिदा हुआ। बहुत दूर चल कर वह एक खुले आँगन में पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि दैत्य मिनोटार सो रहा है।

उसे देख थिसियस धीरे धीरे आगे बढ़ा। जब वह उसकी गर्दन के पास आ गया तब उसने तलवार का एक हाथ उसकी गर्दन पर मारा। मिनोटार का सिर धड से जुदा हो अलग जा गिरा। मिनोटार थोड़ी देर तडप कर मर गया।

थिसियस उस डोरे को लपेटता हुआ बाहर आ गया। वहाँ उसने देखा कि एरियाडन बैठी हुई उसकी राह देख रही है। उसने उसे सलाह दी कि उसे इसी समय यहाँ से चल देना चाहिये। यह सुन थिसियस ने अपने साथियों को जगाया और उनसे सब हाल कहा। वे बडी प्रसन्नता से घर लौट चलने के लिये तैयार हो गये।

सब कोई जहाज़ पर आये। थिसियस ने एरियाडन के साथ चलने को कहा, वह भी राज़ी हो गयी। जहाज़ का लङ्गर उठाया गया और सब कोई सकुशल ग्रीस पहुँच गये।

इन सब को लौटा देख सब को बड़ी खुशी हुई। थिसियस के साथ एरियाडन का विवाह हो गया। तब से ग्रीस वालों ने क्रीट के राजा को हर साल चौदह प्राणी भेजना बन्द कर दिया।
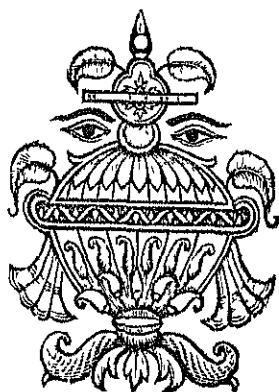
आयो की कहानी।

एक समय ग्रीस के एक भाग में एक छोटी सी नदी बहती थी। उस नदी के दोनों ओर सुन्दर फूलदार घनी झाड़ियाँ थीं। उनके किनारे सुन्दर हरे मैदान थे और सचमुच वे ऐसे हरे थे कि मालूम पड़ता था मानों किसी ने हरी मखमल वहाँ पर बिछा दी है।

उस नदी के देवता के एक सुन्दर कन्या थी जिसका नाम आयो था। वह दिन रात अपने पिता की झाड़ियों में घूमा करती थी।

एक बार सारे देवता और मनुष्यों के राजा जुपिटर पृथ्वी पर आये और उससे बातचीत करने लगे। वे उस भोली भाली लड़की की बातों से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने वह सारा दिन उसके साथ बातों और खेल ही में बिताया। वह बार बार उसके साथ बातचीत करने आया करते थे।

किन्तु जूनो-जुपिटर की स्त्री आयो से घृणा करती थी। क्योंकि तुम जानते हो कि वह किस स्वभाव की स्त्री थी एक दिन, जब जुपिटर आयो के पास गये थे तब वह

जुपिटर अपने असली भेष में आयो के पास नहीं ... एक वरन् वे एक लड़के का भेष धर कर आयो के पास आया

थे। सो जब जूनो वहाँ गयी तब वहाँ उसके जाने के पहिले ही जुपिटर को उसके आने का हाल मालूम हो गया। तब उन्होंने उसी समय अपना असली रूप धारण कर लिया और आयो को एक सफ़ेद रङ्ग की गाय बना डाला। जब जूनो वहाँ आयी तब उसने अपने पति को अपने असली रूप में, और आयो की जगह एक सफेद गाय को हरी हरी दूब चरते पाया।

किन्तु तुम जानते हो कि देवताओं से कोई बात नहीं छिप सकती। जूनो जान गयी कि वह गाय नहीं है वरन् आयो है। सो वह उस गाय के पास जाकर उसकी गर्दन थपथपाने लगी। गर्दन थपथपाते हुए उसने जुपिटर से उसे माँगा। यद्यपि वे उसे जूनो को देना नहीं चाहते थे; तथापि वे अपनी स्त्री की ऐसी छोटी प्रार्थना पर नाहीं नहीं कर सकते थे। सो उन्होंने उस गाय को जूनो को दे दिया।

जूनो उसे पाकर बड़ी प्रसन्न हुई। वह उसे बड़ी ख़बरदारी से रखने लगी। उसने अपने दैत्य नौकर आरगस को उसका पहिरेदार बनाया। आरगस सचमुच एक बड़ा अच्छा पहिरेदार था, क्योंकि उसके सौ आँखें थीं और वह चाहे जितना थका होता पर पचास से अधिक आँखें कभी बन्द न करता। तुम समझ सकते हो कि ऐसा आदमी कैसी अच्छी ख़बरदारी कर सकता है?

आयो को अपने बारे में कुछ भी न मालूम था। वह अपने को आदमी ही समझती थी। जब वह अपने पिता के पास आयी तब उसने भी उसे न पहिचाना, इससे उसे बड़ा दुःख हुआ। अन्त में उसने अपनी कहानी अपने खुरों से बालू पर लिख दी।

नदी के देवता ने उस कहानी को पढ़ा; तब उसे बड़ा [illegible]ख हुआ।

जुपिटर आयो को भूले न थे। थोड़े दिन बाद उन्होंने मरकरी को बुलाया। मरकरी को उन्होंने आरगस के मारने का हुक्म दिया।

ओलिम्पस पहाड से उतर कर मरकरी पृथ्वी पर आया। उसने जङ्गल में भटकती हुई बहुत सी भेड़ें इकट्ठी कीं और आप गडरिया बना। वह अपनी भेड ले कर आरगस के पास आया, और अपनी नरकल की बाँसुरी बजाने लगा।

जब आरगस ने मरकरी की बाँसुरी सुनी, तब वह बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि बहुत दिन अकेले रहते रहते उसका जी ऊब गया था। उसने मरकरी को अपने पास बुलाया और कहा:—

आरगस—वाह दोस्त! आओ मेरे पास इस पत्थर पर बैठो। यहाँ बहुत अच्छी घास है और पानी का भरना भी पास ही है। यहाँ तुम्हारी भेडें सुख से चरेंगी।

मरकरी आरगस के पास आ कर बैठ गया। उसने आरगस को सुलाने के लिये तरह तरह की कहानी कहीं, बाँसुरी बजायी, पर आरगस ने कभी भी अपनी आधी आँखों से अधिक आँखें बन्द न कीं, तब भी वह बराबर उसके सुलाने के लिये उद्योग करता रहा। अन्त में आरगस ने मरकरी से पूँछा कि उसकी बाँसुरी कैसे बनी है। यह सुन मरकरी एक कथा कहने लगा।

मरकरी—एक समय ग्रीस के किसी जङ्गल में साइरिक्स नाम की एक अप्सरा रहती थी। वह बडी सुन्दर थी। एक दिन गड़रियों के देवता पैन ने उसे जङ्गल में घूमते हुए देखा। वह उससे बात करने के लिये आगे

बढ़ा, पर साइरिक्स उसका आधा शरीर बकरे का और आधा मनुष्य का देख, डर गयी और भागी। पैन ने भी उसका पीछा किया पर वह उसे न पा सका। अन्त में वह एक झरने के किनारे आयी और वहाँ उसने अपनी बहिनों, अर्थात् पानी की अप्सराओं से सहायता देने के लिये प्रार्थना की। उन्होंने साइरिक्स की प्रार्थना सुनी, और उसे पानी के भीतर खींच लिया। जहाँ साइरिक्स खड़ी थी वहाँ नरकल का एक झाड़ उग आया। जब पैन वहाँ पहुँचा तब उसने साइरिक्स की जगह नरकल का एक झाड़ देखा। यह देख उसने एक लम्बी साँस ली। उसकी साँस ने नरकल के झाड़ मे एक विचित्र प्रकार की मीठी आवाज़ की। पैन को यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने कुछ नरकल तोड़ कर, एक बाँसुरी बनायी। सो यह बाँसुरी उसी नरकल की बनी है।

जब मरकरी अपनी कथा कह चुका तब उसने देखा कि आरगस सो गया है। यह देख उसे बड़ी ख़ुशी हुई। उसने तलवार से आरगस का सिर काट डाला।

जब जूनो ने अपने कृपापात्र की मृत्यु का हाल सुना, तब उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने आरगस की सब आँखें अपने प्यारे मोर की पूँछ में लगा दीं, जिन्हें तुम हर मोर के पङ्ख पर आज तक देख सकते हो। पर जूनो ने इन सब आफतों की जड़ आयो ही को समझा। सो उसने आयो को दुःख देने के लिये एक डाँस भेजा, जो आयो की खाल में काटने लगा।

इससे आयो को बड़ा दुःख होने लगा। वह बिकल हो भागने लगी। अन्त में वह एक दूर देश में चली गयी और वहाँ एक नदी के किनारे मारे दुःख के लेट गयी और देवताओं से अपने बचाव के लिये प्रार्थना करने लगी।

अन्त में जुपिटर से आयो का दुःख न देखा गया। उन्होंने जूनो से उसको उसके असली रूप मे ला देने के लिये प्रार्थना की। जूनो को भी उस पर दया आयी और उसने उसको फिर आदमी बना दिया।

ईजिप्ट (मिश्र) के लोगों ने उसे अपनी रानी बनाया। उसने बहुत दिन राज्य किया और अन्त में वह बूढ़ी हो कर मर गयी। उसकी मृत्यु से ईजिप्ट वालों को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने उस की एक मूर्त्ति बनायी जिसे वे इसिस देवी के नाम से पुकारने लगे और हज़ारों वर्ष तक लोग उसकी पूजा करते थे।

ग्रीक्स और ट्रोजनस में जो लड़ाई, ट्रॉय नगर के लिये हुई थी; उस लड़ाई से हज़ारों वर्ष पहिले ट्रॉय में लाओमेडन नाम का एक राजा राज्य करता था।

इसी राजा के राज्य काल में ट्रॉय नगर के चारों ओर वे दृढ़ और भारी दीवालें बनायी गयी थीं, जो ट्रोजन—ग्रीकयुद्ध में इतनी प्रसिद्ध हैं। वे दीवालें इतनी दृढ इस कारण थीं कि उन्हें स्वय नेपच्यून और अपालो ने बनाया था।

जल के राजा नेपच्यून को जुपिटर ने ओलिम्पस पहाड़ से उतार कर, पृथ्वी पर भेज दिया था। क्योंकि जुपिटर ने नेपच्यून पर सन्देह किया था कि वह उनकी सारी शक्ति हथिया लेना चाहता है।

जब नेपच्यून पृथ्वी पर आया तब ट्रॉय के राजा लाओमेडन ने उससे अपने नगर के चारों ओर एक चहार दीवारी खींचने को कहा। बदले में उसने नेपच्यून को कुछ बहुमूल्य वस्तु देने का वादा किया।

जुपिटर ने अपालो को भी उस समय अपने दरबार से निकाल दिया था। इसलिये वह भी आ कर नेपच्यून से मिल-

गया और उसे उस भारी दीवाल के बनाने में सहायता देने लगा।

लाओमेडन नेपच्यून की सहायता पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ था। उसने बड़ी उदारता से उसे उसकी मेहनत का बदला देने का वादा किया था। किन्तु वह बड़ा कपटी, विश्वासघाती और नीच मनुष्य था। सो जब दीवालें बन कर तैयार हो गयीं; तब उसने उसे कही हुई वस्तु देने से इंकार किया और नेपच्यून को खाली हाथ लौटा दिया।

नेपच्यून के साथ ऐसा बर्त्ताव कर के लाओमेडन ने बड़ी भूल की। अपने वादे को तोड कर, उसने केवल अपनी बेईमानी ही प्रकट नहीं की वरन् साथ ही उसने अपनी मूर्खता भी प्रकट की। उसने यह न सोचा कि जो इतना बलवान् है, वह शत्रु होने पर क्या बिगाड़ नहीं कर सकता।

दुष्ट राजा लाओमेडन को दण्ड भी शीघ्र ही मिला। थोड़े ही दिनों में उसने सुना कि नित्य समुद्र से एक भयङ्कर सर्प निकलता है और आकर उसकी प्रजा के बच्चों को खा जाता है। बहुत से आदमी उसे मारने के लिये भेजे गये पर सब ही को उस सर्वभक्षी अजगर ने खा डाला। इसी तरह ट्रॉय के बहुत से वीर अपने प्यारे बच्चों को बचाने के उद्योग में स्वयं बलि बन गये।

अन्त मे ट्रोजन्स ने अपने ज्योतिषी के पास जा कर, राय माँगी। ज्योतिषी ने कहाः—

"ट्रोजन्स को नाश से बचाने के लिये केवल एक
"उपाय है। वह यह कि उस अजगर को एक ऐसी
"कन्या भेंट की जाय जो सब से बढ़ कर सुन्दरी
"हो। इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।"

ज्योतिषी की आज्ञा पूरी करने के लिये एक लड़की तलाश की गयी। अन्त में यह विपत्ति एक सुन्दरी और सुशील लड़की पर पड़ी। पुरोहित लोग उसे लेकर समुद्र के किनारे गये। वहाँ उन्होंने उसे एक ज़ञ्जीर (साङ्कल) से बाँध कर समुद्र में निकली हुई एक चट्टान से लटका दिया।

थोड़ी ही देर में समुद्र का पानी ज़ोर ज़ोर से उछलने लगा। दूर से एक भयङ्कर काला अज़दहा आता हुआ दिखलाई पड़ा। सब लोग मारे भय के काँपने लगे। साङ्कल से बँधी हुई लड़की चीख़ मार कर बेहोश हो गयी। देखते देखते अज़दहे ने अपना मुँह खोला और बेचारी लड़की उसके मुँह में जा गिरी।

तब से एक साल तक ट्रॉय में शान्ति रही। पर साल भर बाद फिर वह भयङ्कर अज़दहा समुद्र से निकल कर उपद्रव मचाने लगा। लोगों ने फिर एक निर्दोष बालिका की बलि देकर इस उपद्रव से छुटकारा पाने की इच्छा की। शीघ्र ही एक बालिका फिर बलि दी गयी और साल भर तक ट्रॉय में फिर शान्ति रही।

इसी तरह हर साल वह भयङ्कर सामुद्री अजगर निकल कर, ट्रोजन्स को सताया करता, और एक बालिका की बलि पाने पर साल भर तक चुप रहता।

एक साल ऐसा हुआ कि ट्रॉय में राजा लाओमेडन की कन्या हैसिअन को छोड़ कर और कोई सुन्दरी बालिका न रही। सो उस साल उसीके बलि देने की बात आयी। राजा को यह सुन कर, जो दुःख हुआ, वह कहा नहीं जा सकता।

वह स्वयं इस मामले में निरुपाय और लाचार था। अन्त में उसने पास की रियासतों में अपने दूत भेज कर, यह विज्ञापन प्रकाशित किया कि:—

"कई साल से एक भयङ्कर सामुद्री अजगर निकल
"कर, मेरी प्रजा के दुःख पहुँचाता है, और जब
"उसे एक सुन्दर कन्या बलि दी जाती है; तब एक
"साल तक वह फिर शान्त रहता है। इस साल
"मेरी कन्या हैसिअन के छोड़ कर और कोई
"सुन्दरी ट्रॉय में नहीं है। हैसिअन मेरी इक-
"लौती सन्तान है। मेरा उस पर बड़ा स्नेह है।
"जो कोई बलवान् हो, या जिसमें उस भयङ्कर
"अज़दहे के मारने की शक्ति हो; वह अपना भाग्य
"परखे। मैं इस भयङ्कर अज़दहे के मारने वाले को
"बहुत भारी इनाम दूँगा। अज़दहे को मारने की
"इच्छा रखने वाले को बहुत ही शीघ्र ट्रॉय आ जाना
"चाहिये क्योंकि राजकुमारी की बलि शीघ्र ही
"दी जायगी।"

ऐसा हुआ कि प्रसिद्ध वीर हरक्युलीज़ ने राजा लाओमेडन का यह विज्ञापन पाया। वह इसे पाकर एक दम ट्रॉय को चल दिया।

इतने ही में राजकुमारी के बलि दिये जाने का दिन भी आ गया। लोग काले कपड़े पहिन रोते हुए समुद्र की ओर चले। बीच में राजकुमारी थी। पीछे शोक से विह्वल रोता हुआ राजा लाओमेडन था। धीरे धीरे वह जन समाज समुद्र के किनारे पहुँचा। वहाँ राजकुमारी साँकल से बाँध कर, उसी चट्टान से लटका दी गयी जहाँ से वह अज़दहा बहुत सी कन्याओं को ले गया था। थोड़ी ही देर में अज़दहा भी समुद्र से निकला और मुँह खोल कर राजकुमारी की ओर चला।

वह चाहता ही था कि राजकुमारी को निगल ले कि इतने ही में हरक्युलीज़ वहाँ आ पहुँचा। उसने अपने भयङ्कर डण्डे से अज़दहे का फन कुचल डाला। थोड़ी देर में अज़दहे की लाश समुद्र के पानी पर उतराने लगी।

सारे उपस्थित ट्रोजन मारे खुशी के चिल्लाने लगे। उनकी आवाज़ों से आकाश गूँजने लगा। चारों ओर हरक्युलीज़ की बड़ाई होने लगी। राजा लाओमेडन और राजकुमारी हैसिअन अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये हरक्युलीज़ के पैरों पर गिर पड़े। उनकी प्रसन्नता का वर्णन नहीं हो सकता।

यह सब हुआ पर राजा लाओमेडन ने अपनी बेईमानी न छोड़ी। क्योंकि वह कट्टर बेईमान था। उसने हरक्युलीज़ को वह इनाम देने से इंकार कर दिया; जिसका कि उसने विज्ञापन दिया था।

राजा लाओमेडन का इंकार सुन, हरक्युलीज़ को बड़ा क्रोध आया। वह मारे क्रोध के वहाँ से चल दिया। ट्रॉय से आकर उसने पहिला काम यह किया कि उसने बहुत से वीरों को इकट्ठा किया और उन सब को छः जहाज़ों में ले वह ट्रॉय को चला।

ट्रोजन्स में इस वीर सेना से लड़ने की हिम्मत न थी सो हरक्युलीज़ ने शीघ्र ही ट्रॉय पर क़ब्ज़ा कर लिया और राजा लाओमेडन और उसकी रानी को पकड़ कर, मार डाला।

हैसिअन को वह ग्रीस ले गया और वहाँ उसने उसका विवाह अपने मित्र और प्रधान सहायक टेलामन से कर दिया।

———:o:———
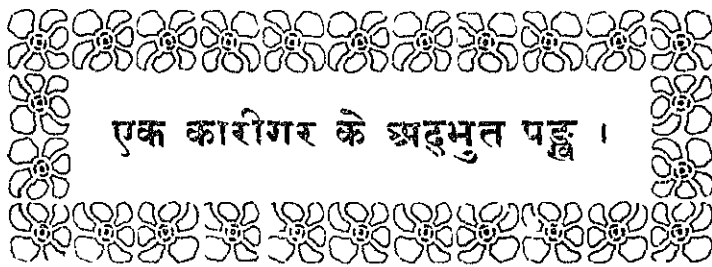
एक कारीगर के अद्भुत पङ्ख।

प्राचीन ग्रीस की राजधानी एथेंस में, बहुत दिनों पहिले डेडालस नाम का एक कारीगर रहता था। वह एक बड़ा चतुर सङ्ग-तराश था। वह बहुत सुन्दर मूर्त्ति और जाली बनाने में विख्यात था। इसके सिवाय वह मकान बनाने के लिये भी विख्यात था। इसी कारण लोग उसका बड़ा आदर किया करते थे। किन्तु उसकी सब से अच्छी कारीगरी और तीक्ष्ण बुद्धि का नमूना क्रीट की भूलभुलैयाँ थीं।

ग्रीस से थोड़ी ही दूर पर क्रीट का द्वीप है। वहाँ उस समय राजा मिनोस राज्य करता था। वह बड़ा सज्जन था। जिससे वह मित्रता करता, उसका पूरा मित्र हो जाता और जिसका शत्रु होता उसका पूरा अनिष्ट करता था। राजा मिनोस के पास एक राक्षस था, जिसका नाम मिनोटार था। वह बड़ा भयङ्कर था। राजा मिनोस ने उसीको बन्द करने के लिये डिडालस से वे भूलभुलैयाँ बनवायीं थीं।

भूलभुलैयों के बीच में एक खुला हुआ आँगन था; जिसमें मिनोटार रहता था। उस आँगन के चारों ओर दूर तक कोठरियाँ बनी हुईं थीं जिनमें हो कर रास्ते थे; पर वे इतने घुमाव के थे

कि जो लोग उनमें जाते, वे उन रास्तों में भूल जाते और फिर कभी बाहर न आ सकते।

डिडालस का एक भतीजा था जिसका नाम परडिक्स था। वह बड़ा चतुर लड़का था। उसकी इच्छा सदा नयी नयी बातें सीखने को रहती थीं। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह उस कारीगरी को सीख ले जिसके कारण उसका चाचा इतना प्रसिद्ध था। डिडालस अपने भतीजे को सङ्ग-तराशी का काम सिखाने लगा। जो कुछ उसे आता था, उसने सब अपने भतीजे को सिखला दिया। परडिक्स इतना तेज था कि उसने थोड़े ही दिनों में वह सब सीख लिया। यही नहीं, उसी छोटी अवस्था में उसने कई आविष्कार किये। उनमें आरी और कुतुबनुमें के आविष्कार ही मुख्य थे। सारा एथेंस बालक परडिक्स की बडाई से गूँज उठा। लोग कहने लगे कि कुछ दिनों में वह अपने चाचा डिडालस से भी बढ़ जायगा।

ऐसा सुनते सुनते डिडालस के हृदय में अपने भतीजे परडिक्स के प्रति, स्नेह के बदले घृणा और डाह का सञ्चार हुआ। धीरे धीरे उसका डाह बहुत बढ़ गया।

एक दिन चाचा भतीजे, सन्ध्या के समय, एक चट्टान के ऊपर, जो समुद्र के किनारे थी, टहल रहे थे। परडिक्स उन बातों के बारे में अपने चाचा से कहासुनी कर रहा था जिन्हें वह धीरे धीरे करना चाहता था। इस समय डिडालस के हृदय में एकाएक ईर्ष्याग्नि भड़क उठी। वह अपने को और न रोक सका। उसने परडिक्स को धक्का दिया और वह समुद्र में जा गिरा।

परडिक्स के जीने की कोई आशा न थी; पर उसकी मृत्यु अभी न आयी थी। मिनेरवा ने, जो युद्ध और विद्या की देवी हैं;

उसकी रक्षा की। क्योंकि वह उस पर प्रसन्न थी। उसने उसे तीतर बना दिया और वह उड़ गया।

अब डिडालस के डर लगा कि यदि एथेंस वासी उसका हाल जान जायँगे तो वे अवश्य ही उसे मार डालेंगे। इससे डर कर वह क्रीट के भाग गया। साथ में अपने छोटे लड़के इकारस को भी ले गया। वहाँ राजा मिनास्त ने उसे बड़े आदर के साथ अपने पास रखा।

तुम्हें मालूम है कि राजा मिनोस की कैसी प्रकृति थी। कई कारणों से वह डिडालस से नाराज़ हो गया। सो उसने डिडालस और इकारस दोनों के क़ैदी बना लिया।

क़ैद में रहते रहते दोनों का मन ऊब गया। वे किसी प्रकार इस द्वीप से भाग जाना चाहते थे। पर उन्हे समुद्र पार करने के लिये कोई भी नाव न मिल सकती थी। इसलिये वे बड़ी चिन्ता मे रहते थे।

एक दिन इकारस आकाश की ओर देख रहा था। उसने देखा कि बहुत सी चिड़ियाँ इधर उधर उड़ रही हैं। यह देख उसके मन में एक नयी बात उठी। उसने पास बैठे, और चिन्ता में डूबे हुए अपने पिता से कहा:—

इकारस—पिता! पिता!! देखिये वह जहाज़ कैसी तेज़ी के साथ चला जा रहा है। उसके सफ़ेद बाल ठीक पर ऐसे मालूम होते हैं। वह ठीक उसी तरह उड़ रहा है, जिस तरह चिड़ियाँ आसमान में उड़ा करती हैं।

बालक की ऐसी बातें सुन, डिडालस के हृदय में एकाएक एक नया भाव उत्पन्न हुआ। उसने सोचा कि यदि वह किसी तरह अपने और इकारस के लिये दो जोड़ी पर बना सके तो अवश्य ही उस क़ैद से छुटकारा पा जायगा।

उसी दिन से वह पर बनाने की कोशिश में लगा। उसने तरह तरह के बहुत से पर इकट्ठे किये। बहुत दिनों के परिश्रम के बाद वह दो जोड़ी पर बना सका। जब पर तैयार हो गये तब उसने अपने और अपने पुत्र के कन्धों पर, उन्हें मोम से चिपका लिये।

तब उसने इकारस से कहा:—

डिडालस—प्यारे इकारस, तुम मुझे देखते रहना और जिधर मैं जाऊँ उधर तुम भी चले चलना। यदि तुम बहुत नीचे जावोगे तो पानी से पर भींग कर ख़राब हो जाँयगे और जो बहुत ऊपर जावोगे तो सूर्य की गर्मी जला देगी।

इतना कह कर, उसने ईश्वर से कुशल मङ्गल के लिये प्रार्थना की और वे दोनों उड़ने लगे।

धीरे धीरे दोनो आकाश में ऊँचे उठे और उड़ने लगे। जिन मल्लाहों, यात्रियों या और लोगों ने उन्हें देखा वे सब उनको कोई देवता समझने लगे। जब वे उड़ते उड़ते उनके ऊपर आते तब वे झुक कर उनको प्रणाम करने लगते। वे समुद्र और पृथ्वी के ऊपर उड़ते उड़ते आगे चले। जाते जाते डिडालस रह रह कर पीछे देखता जाता था कि इकारस उसका पीछा कर रहा है या नहीं।

थोड़ी देर तक तो इकारस डिडालस के साथ साथ चला पर कुछ देर बाद उसका डर छूट गया, और जब उसका पिता पीछे फिर कर न देखता तब वह ऊपर चढ़ जाता।

पर अफ़सोस! जितना ऊँचा वह चढ़ता उतनी ही अधिकता से सूर्य की गर्मी उसके ऊपर आती। अन्त में, सूर्य की गर्मी से

मोम पिघल गया और पङ्ख गिर कर समुद्र में चले गये। बेचारा इकारस भी नीचे गिरा। उसने ज़ोर से अपने पिता को बुलाया। जब अभागे पिता ने पीछे फिर कर देखा तब इकारस का सिर समुद्र की लहरों मे छिप गया था। और वे पङ्ख-घातक पङ्ख-समुद्र की लहरों पर खेल रहे थे।

अभागा डिडालस भी नीचे कूद पड़ा। उसने अपने प्यारे पुत्र की लाश ले ली और उसे ले कर तैरता हुआ पास के एक द्वीप में चला गया। वहाँ उसने एक कबर खोद कर इकारस को उसमें गाड़ दिया।

जब वह इकारस को गाड रहा था; तब उसने देखा कि सामने की डाल पर एक तीतर बैठा है और अपने पङ्ख हिला रहा है। यह देख उसे एकाएक परडिक्स का ध्यान आया। उसे मालूम होने लगा कि मानों परडिक्स की हत्या के बदले ही में इकारस की मृत्यु हुई है।

जिस द्वीप में इकारस की लाश गाडी गयी थी वह द्वीप इकारस द्वीप और समुद्र के जिस भाग में इकारस गिरा था वह इकारियन सागर के नाम से विख्यात है। ये दोनों भूमध्य-सागर मे हैं और हमारी कथा की गवाही दे रहे हैं।

हरक्युलीज़

बहुत दिन हुए जब ग्रीस में एक बालक का जन्म हुआ था। वह अपने समय में सब से बलवान् आदमी था। उसका नाम हरक्युलीज़ था।

देवी जूनो उसकी माता से घृणा किया करती थी। इस कारण वह हरक्युलीज़ को मार डालने के लिये चिन्ता करने लगी। अन्त में उसने दो साँपों को उसके मारने के लिये भेजा।

जिस समय वे साँप उस बालक के पलने के पास पहुँचे; उस समय बालक हरक्युलीज़ सो रहा था। उसकी दाई उसके पास बैठी उसकी रखवाली कर रही थी। जब उसने भयङ्कर साँपों को अपने पास आते देखा तब मारे डर के वह चिल्ला उठी। उसकी चिल्लाहट से हरक्युलीज़ की नींद टूट गयी। वह जाग उठा। जब उसने आँखें खोलीं, तब उसने दो साँपों को अपने सामने देखा। बालक हरक्युलीज़ ने खेलते खेलते उन्हें पकड़ लिया और दोनों का सिर कुचल डाला। दोनों साँप मर गये। दाई को इस भयङ्कर व्यापार को देख बड़ा आश्चर्य हुआ।

जब हरक्युलीज़ बड़ा हुआ; तब उसके समान बली कोई दूसरा न रहा। वह सदा कमज़ोर की सहायता किया करता। जूनो सदा उससे घृणा किया करती। उसने उसके मारने की

बहुत तदबीरें कीं। उसे बड़ी कठिन लड़ाइयाँ लड़नी पड़तीं। बड़े बड़े भयङ्कर दैत्यों को मारना पड़ता। कहाँ तक कहें सदा वह अपनी जान हथेली पर लिये फिरा करता। पर वह ऐसा वीर था कि उसने सब विपत्तियों का सामना किया और उनसे बच गया।

जब जूनो हरक्युलीज़ को सब तरह से दुःख दे चुकी और कोई परिणाम निकलते न देखा, तब उसने उसे आरगस राजा के यहाँ दास बना दिया।

हरक्युलीज़ बड़ा बलवान् था, उसे कोई काम भारी नहीं मालूम होता था। पर 'दासत्व' उसके लिये सब से कठिन काम था। वह बड़ी चञ्चल प्रकृति का मनुष्य था। दासत्व शृङ्खला में बँधे रहने के कारण वह सदा दुःखी रहने लगा।

हरक्युलीज़ ऐसा वीर जब अपने दासत्व से दुःखी हुआ; तब राजा आरगस को उस पर दया आयी और उसने हरक्यु-लीज़ को छोड़ देने का प्रण किया।

पर उस छुटकारे में बड़ी भयङ्कर शर्त्तें थीं। अर्थात् छूटने से पहिले उसे बारह कड़े कड़े काम करने पड़े। हरक्युलीज़ को अपनी वीरता दिखाने का अवसर देख बड़ा हर्ष हुआ।

वे बारहों काम "हरक्युलीज़ के बारह परिश्रम" के नाम से विख्यात हैं। यदि एक का भी वर्णन किया जाय तो कथा बहुत बढ़ जायगी, क्योंकि प्रत्येक काम स्वयं एक कहानी है। सारांश यह है कि उसे बड़े बड़े राक्षस, दैत्य और दानव मारने पड़े थे। भयङ्कर जानवर पकड़ने पड़े थे, बहुत तेज़ तेज़ घोड़ों को पकड़ना पड़ा था, और बहुत सी भयङ्कर लड़ाइयाँ लड़नी

पड़ी थीं। किन्तु अन्त में हरक्युलीज़ ने सबको मार डाला और राजा आरगस के दासत्व से छुटकारा पाया।

जब हरक्युलीज़ को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गयी, तब वह आरगस राजा के राज्य से बाहर चला। चलते चलते जब वह एक राज्य में आया तब उसने वहाँ के राजा की कन्या की सुन्दरता की बड़ी बड़ाई सुनी, और उसने उससे विवाह करना चाहा।

जब राजा ने सुना कि प्रसिद्ध वीर हरक्युलीज़ उसकी लड़की से विवाह करना चाहता है; तब वह बड़े असमञ्जस में पड़ा। क्योंकि उसने अपनी लड़की की सगाई एक बड़े जल-देवता से पक्की कर ली थी। अन्त में उसने यह ठीक किया कि दोनों आपस में लड़ें, जो जीतेगा उसीके साथ राजकुमारी का विवाह होगा।

यह सुन के दोनो बड़े प्रसन्न हुए। हरक्युलीज़ को इस बात का पूरा विश्वास था कि वह जीत जायगा, क्योंकि वह बहुत बलवान् था। इसी तरह जल के देवता को भी अपनी जीत का पूरा विश्वास था, क्योंकि वह अपने को जब चाहता तब जानवर बना सकता और अन्तर्द्धान हो सकता था।

दोनों आदमी अखाड़े में उतरे, राजा का इशारा पाते ही दोनों आपस में भिड़ गये।

कुश्ती आरम्भ होते ही लोगों ने देखा कि हरक्युलीज़ ने नदी के देवता को पटक दिया। हरक्युलीज़ की ताक़त के सामने वह बच्चा मालूम देता था। जैसे ही हरक्युलीज़ ने उसे चित्त करना चाहा वैसे ही नदी के देवता ने मंत्र के बल से साँप का रूप धारण किया और वह उसकी बग़ल से निकल गया। यह देख हरक्युलीज़ ज़ोर से हँसने लगा और हँसते हँसते बोला:—

हरक्युलीज़-आहा ! तुम समझते हो कि इस तरह करने से मुझसे तुम बच जाओगे ? अजी, जब मैं विलकुल, दूध पीने वाला बच्चा था; तब मैंने तुमसे तिगुने बड़े बड़े दो साँपों को मार डाला था।

इतना कह कर, वह साँप पर झपटा और चाहता था कि एक पल में उस भयङ्कर साँप की गर्दन दबादे कि इतने ही में उस साँप की जगह एक भयङ्कर बैल पैदा हो गया। इस बार भी नदी के देवता ने अपने को, अपनी सूरत बदल कर बचा लिया।

अब युद्ध का सब से भयङ्कर भाग आरम्भ हुआ। वह भयङ्कर बैल भीम विक्रम से हरक्युली़ की ओर झपटा। हरक्युलीज़ भी इस आक्रमण के रोकने को तैयार था। जैसे उसने हरक्युलीज़ पर आक्रमण किया, वैसे ही उसने उसके सींग थाम कर ज़ोर से उसे ज़मीन पर पटक दिया। उसी समय लोग चिल्ला उठे—"हरक्युलीज़ जीता" "हरक्युलीज़ जीता।"

तब नदी का देवता अपने असली वेष में प्रगट हुआ और उसने अपनी हार स्वीकार की। राजा की सुन्दर लड़की के साथ हरक्युलीज़ का विवाह हो गया।

जब दोनों का विवाह हो गया, तब हरक्युलीज़ अपनी स्त्री को ले कर, ग्रीस की ओर चला।

जब वे कुछ दूर चले गये; तब उन्हें एक झरना मिला। तुम जानते हो कि पहाड़ी झरनों में बहुत कम पानी रहता है, पर बरसात के दिनों में या जब बर्फ गलने लगती है; तब उनमें बहुत पानी हो जाता है। सो इस समय झरने में पानी की बाढ़ आ गयी थी और पार जाना कठिन था।

हरक्युलीज अकेला तो पार बड़े मज़े में जा सकता था; पर राज-कुमारी को उस झरने में ले जाने से वह हिचकता था, और खड़े खड़े पार जाने की तदबीर सोच रहा था।

उस समय एक सिण्टार वहाँ आया। तुम जानते हो कि सिण्टारों का आधा बदन आदमी का और आधा घोड़े का होता है। सो वह पानी में बड़े मज़े के साथ तैर सकता है। उसने राज-कुमारी को पार ले चलने की इच्छा प्रकाशित की। हरक्यु-लीज़ ने भी उसकी बात मान ली। राज-कुमारी उसकी पीठ पर चढ़ी और वह सिण्टार, जिसका नाम नेसस था, पानी में कूदा।

नीचे की धार बहुत तेज़ थी, और नेसस को तैरने मे बड़ी मेहनत पड़ी। तैरते तैरते उसकी नियत बिगड़ गयी। उसने राज-कुमारी को ले कर, भागने की ठानी। सो जैसे ही उसने सूखी ज़मीन पर अपना पैर रखा, वैसे ही वह बड़ी तेज़ी के साथ पहाड़ की ओर जहाँ उसकी गुफा थी, भागा। राज-कुमारी मारे डर के उसकी पीठ से चिपट गयी और बड़ी ज़ोर से चिल्लाने लगी।

हरक्युलीज़ उस समय तैर रहा था। धार बड़ी तेज़ थी और उसको बड़ी मेहनत पड़ रही थी। राज-कुमारी की चिल्ला-हट से उसका ध्यान उधर गया और वह असली बात समझ गया। तब उसे बड़ा क्रोध आया। जोश में आ कर, वह दो ही चार हाथ मार कर किनारे पर पहुँच गया और भागते हुए सिण्टार नैसस से चिल्ला कर कहा:—

हरक्युलीज़—अरे धोकेबाज़ नैसस! तू समझता है कि तू अपने तेज़ पैरों के कारण मुझसे बच सकता है। यह ठीक भी है, पर दुष्ट मेरे तीर तुझसे भी अधिक

तेज़ हैं। ले अपने कर्तव का फल चख।

इतना कह कर, उसने अपने धनुष पर तीर चढ़ाया। वह तीर उसके तरकस में सब से अधिक तेज़ और बढ़िया था। बड़ी सावधानी से उसने निशाना लगाया। बात की बात में वह तीर सिण्टार नैसस के लगा। वह राजकुमारी के साथ साथ वहीं गिर पड़ा।

नैसस एक बार बडी दर्द भरी आवाज़ से चिल्लाया और तब अपने कुर्त्ते को, तीर के घाव से बहते हुए खून में डुबो कर, राजकुमारी को दिया और टूटी हुई आवाज़ में बोलाः—

नैसस-राजकुमारी, इसे लो, और जब कभी तुम्हारा पति तुम से प्रेम करना छोड़ दे या तुम्हें भूल जावे तब यदि इस कुर्त्ते को—ज...ज. जो म ..म...र...ते...सि .सि...न...टा...र...के...ल...हो . ह...हू...में ...ड . ड ..डु...बा. .या.. ग...या...है...उ...से ...भि गो ..दो...गी...त. .तो...व...ह.. ल... तु...म...से फ...फि .र...प...प्रे...म...क... र...न.. ने...ल ..ग...गे ..गा।

इतना कहते कहते उसकी दम टूट गयी और वह मर कर, वहाँ गिर पडा।

वह तीर जिससे हरक्युलीज़ ने नैसस को मारा था, एक भयङ्कर राक्षस के विष में बुझाया हुआ था; और वह इतना तेज़ विष था कि एक ही पल में उसका पूरा असर नैसस के सारे खून में हो गया था। सो वह रक्त में डुबोया हुआ कुर्त्ता उतना ही ज़हरीला था, जितना कि वह तीर।

थोड़ी ही देर में हरक्युलीज भी जो पीछे रह गया था आ गया। राज-कुमारी ने उससे उस कुर्त्ते के बारे में कुछ भी न कहा और न उसे दिखाया। वहाँ से वे दोनों हरक्युलीज़ के जन्म-नगर की ओर चले।

वहाँ वे दोनों बहुत दिनों तक रहे, हरक्युलीज़ ने राज-कुमारी से ऐसा अच्छा बर्त्ताव किया कि वह सब को भूल गयी और साथ ही नैसस के दिये हुए कुर्त्ते को भी भूल गयी।

किन्तु हरक्युलीज़ का मन घर पर बिलकुल न लगता था। वह इस तरह घर पर चुपचाप रहते रहते थक गया था और जब वह अपने पुराने कामों का ध्यान करता; तब उसकी यही इच्छा होती कि वह दूर देशों में जावे और बड़े बड़े काम करे जिससे और भी उसका नाम हो। सो एक दिन वह यात्रा के लिये अपने घर से चल दिया।

राज-कुमारी ने उससे घर पर रहने को बहुत कुछ कहा; पर वह न माना। वह उसीमें प्रसन्न थी जिसमें हरक्युलीज़ प्रसन्न था, और हरक्युलीज़ घूमने से बहुत प्रसन्न रहता था इस कारण वह उसकी प्रसन्नता में बाधा पहुँचाना नहीं चाहती थी।

हरक्युलीज़ बहुत दूर चला गया, बहुत से देशों में घूमता घामता वह समुद्र के किनारे पहुँचा। वहाँ वह एक बड़े नगर में गया जहाँ एक राजा राज्य करता था। वहाँ उसने राजा की लड़की देखी जो बड़ी सुन्दरी थी। जिस तरह वह पहिली राज-कुमारी से प्रेम करने लगा था, उसी तरह वह उससे भी प्रेम करने लगा। वह अपनी स्त्री (पहिली राज-कुमारी) को बिलकुल भूल गया और सदा इस दूसरी राज-कुमारी के महल मे रहने लगा।

थोड़े दिनों बाद अभागी राजकुमारी (हरक्युलीज़ की पहिली स्त्री) ने यह सब हाल सुना। उसने यह भी सुना कि अब वह उसे बिलकुल भूल गया है। वह मारे शोक के पगली हो गयी। यहाँ तक कि उसका शरीर दुबला हो गया और वह पीली पड़ गयी।

थोड़े दिनों बाद उसे सिनटार नैसस की कही हुई बात याद आयी। उसने हरक्युलीज़ के पास वह कुर्त्ता भेजना चाहा। इसलिये उसने अपने सब से विश्वासी नौकर को बुलवाया और उसे वह कुर्त्ता देकर बोली:—

राजकुमारी—तुम इस कुर्त्ते को अपने स्वामी के पास जो आजकल समुद्र के किनारे उस बड़े नगर में है; जिसमे राजा राज्य करता है, ले जाओ। तुम उसे यह कुर्त्ता बड़ी सावधानी से देना और कहना कि तुम्हारी स्त्री ने कहा है कि मेरी ख़ातिर इस कुर्त्ते को पहिन लो। देखो, इस कुर्त्ते को ख़ूब सावधानी से ले जाना।

विश्वासी नौकर कुर्त्ता ले कर चला गया। बेचारी राजकुमारी क्या जानती थी कि वह कैसा भयङ्कर काम कर रही है! उसे क्या मालूम था कि जिसे वह अमृत समझती है वह पूरा हलाहल है।

विश्वासी सेवक उस कुर्त्ते को लेकर, सैकड़ों मील का सफ़र तय करके, उस नगर में पहुँचा; जहाँ हरक्युलीज़ रहता था। उसने उसे वह कुर्त्ता दिया और उससे राजकुमारी का सन्देसा कहा।

हरक्युलीज़ ने उसे उसी समय पहिन लिया। थोड़ी ही देर में उस कुर्त्ते के विष ने अपना असर दिखलाना आरम्भ

किया। उसके सारे शरीर में विचित्र प्रकार का दर्द होने लगा। उसका शरीर, विष की ज्वाला से जलने लगा। उसने उस भयानक कुर्ते को अपने शरीर से उतार देना चाहा पर, वह उसके शरीर से चिपक गया। तब दर्द को सहन न कर के, वह समुद्र के किनारे इधर उधर घूमने लगा। घूमते घूमते वह चिल्लाने लगा। उसकी चिल्लाहट ऐसी मालूम होती थी कि मानो बादल गरज रहा है। उसकी यह दशा देख, नौकर डर गया और एक चट्टान के पीछे छिप गया।

हरक्युलीज़ ने उसे चट्टान के पीछे छिपा हुआ देख लिया। वह उसके पास दौड़ा गया और उसे ऊपर उठाया और इसके पहिले कि वह अपनी निर्दोषता के बारे में कुछ भी कह सके, उठा कर, दूर समुद्र में फेंक दिया।

देवताओं को उस नौकर पर दया आयी, और जब वह गिर रहा था; तब उसे पत्थर का बना दिया और वह पत्थर आज भी समुद्र के बीचों बीच इस बात की साक्षी देने को उपस्थित है।

जब हरक्युलीज़ ने देखा कि अब वह इस भयङ्कर विपत्ति से किसी तरह छुटकारा नहीं पा सकता; तब वह साहस के साथ एक वीर की नाईं मरा। उसने अपने हाथों से बड़े बड़े पेड़, झाड़ियाँ आदि तोड़ कर, इकट्ठी कीं, और उनकी चिता बनायी। वह उस पर लेट गया और अपने एक मित्र से उसमें आग लगाने को कहा।

हरक्युलीज़ अपनी मृत्यु-शय्या पर शान्ति के साथ लेटा लेटा मृत्यु की राह देखता रहा। इतने ही में उसके मित्र ने उस चिता में आग लगा दी। आग की लपटें ऊँची उठने लगीं; यहाँ तक

कि, उनमें से भयङ्कर आवाज़ निकलने लगी। धीरे धीरे आग बढ़ने लगी और यहाँ तक बढ़ी कि वह ऊँचे पेड़ों से भी ऊँची हो गयी। उसकी लपटें इस तरह लपक रही थीं कि मानों उस बड़े वीर को भस्म कर, वह प्रसन्न हो रही हैं। उसका प्रायः सभी शरीर जल गया था और जैसे ही उसका सिर जलने लगा, वैसे ही जुपिटर ने उसे अपने पास बुला लिया। उसका मानवी शरीर जल गया था; पर वह न जला था। तभी से हरक्युलीज़ ओलिम्पस पहाड़ का एक विक्रमशाली देवता हो गया है।
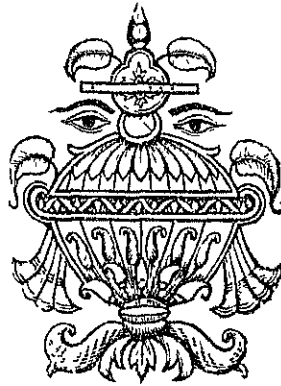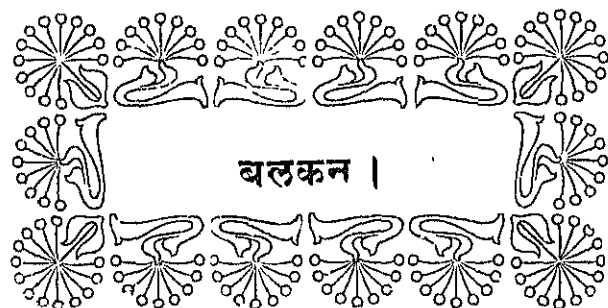
बलकन।

बलकन देवता, वास्तव में ओलिम्पस पहाड़ के देवताओं से दूसरी प्रकृति का था। वह प्रायः इटना पहाड के जङ्गलों मे रहा करता था और बहुत ही कम दूसरे देवताओं से मिला जुला करता था। वह सदा परिश्रम किया करता था, और उसने साइक्लोप्सयों के साझे में इटना, विस्यूवियस आदि पहाड़ों में कारख़ाने खोल रखे थे, जहाँ वह हर तरह की चीज़ें बनाया करता था।

वह ज़रा लङ्गड़ा कर चला करता था। बात यों थी कि एक समय जुपिटर और जूनों में कुछ खटपट हुई। बलकन ने उसमें कुछ बीच बिचाव किया। इससे देवता जुपिटर नाराज़ हो गये और उन्होंने बलकन को उठा कर पृथ्वी पर फेंक दिया। वह ऊपर से बराबर एक दिन और एक रात गिरता रहा और तब लेमन के द्वीप मे ऐसे ज़ोर से गिरा, जिसे केवल देवता ही सहन कर सकते हैं। पर बलकन भी इस धक्के से बिलकुल न बचा। तब उसके पैरों में चोट जो लगी उसके कारण वह सदा लङ्गड़ाता हुआ चला करता था।

देवी जूनो ने भी उसकी कुछ अधिक परवाह न की। वरन् उसने यह भी जानने की कोशिश न की कि बलकन मर गया या जीता है। जूनो बलकन की माता थी और जब उसने अपनी माता का यह हाल सुना तो वह अपने माता पिता दोनों की ओर से विरक्त हो गया। यही कारण था कि वह ओलिम्पस नगर को छोड़ कर पहाड़ों पर रहता था।

बलकन ने बहुत सी अद्भुत अद्भुत चीज़ें बनायीं, जिनमें सोने का एक सिंहासन बहुत प्रसिद्ध था। वह सिंहासन इस प्रकार से बनाया गया था और उसमें ऐसी ऐसी छिपी कमानियाँ थीं कि जो उस पर बैठता उसे वह सिंहासन पकड़ लेता और वह उस पर से उठ न सकता था।

बलकन ने इसे अपनी माँ जूनो के लिये बनाया था। उसने इस विचित्र सिंहासन को जूनो के पास भेजा। उसने इसे बड़ी प्रसन्नता के साथ लिया। जैसे ही वह उस पर बैठी, वैसे ही छिपी हुई कमानियों ने उसे बाँध दिया। अब वह एक क़ैदी की तरह हो गयी। बहुत से देवता उसकी सहायता करने के लिये आये; पर किसी की बुद्धि ने काम न किया। अन्त में वे किसी तरह बलकन को लाने की तदबीर सोचने लगे।

सब की राय से मरकरी बलकन के पास भेजा गया। उसने जाकर बड़ी अधीनता से बलकन से जूनो का सँदेसा कहा और वहाँ चलने के लिये उससे बड़ी प्रार्थना की; पर वह किसी तरह भी वहाँ चलने को राजी न हुआ। क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी बुलाहट क्यों हुई है। मरकरी अपना सा मुँह लिये लौट आया।

जब मरकरी लौट आया, तब देवता बड़े चक्कर में पड़े। अन्त में उन्होंने बेकस को इस कार्य के लिये भेजना निश्चित किया।

बेकस शराब का देवता था। वह अपनी विचित्र शक्ति के लिये प्रसिद्ध था। वह मनुष्यों और देवताओं को बेहोश कर, अपना काम करवा लिया करता था। जब वह बलकन के पास चला; तब वह दूसरी ही प्रकार से चला। उसे यह विश्वास न था कि वह बलकन को समझा बुझा कर या उससे बहस कर उसे आने के लिये राज़ी कर लेगा।

उसने अपनी सब से तेज़ शराब ली और जब बलकन थक कर बैठा था; तब उसे एक प्याला दिया। बलकन बिना सोचे बिचारे उसे पी गया। उसे वह ऐसी अच्छी लगी कि वह प्याले पर प्याले ढालने लगा। यहाँ तक कि वह बेहोश हो गया।

अब बेकस बलकन को समझाने लगा। इस बार वह बहुत शीघ्र बेकस के कहने मे आ गया। बेकस उसे स्वर्ग में ले गया और उसने वहाँ जाकर जूनो को उस सिंहासन से छुड़ाया और इस तरह वह अपने माता पिता का कृपा-पात्र हुआ।

यद्यपि वह सदा ओलिम्पस में नहीं रहता था; तथापि अब वह ओलिम्पस पहाड वालों से मित्रता करने लग गया। उसने इटना पहाड़ मे बहुत विचित्र विचित्र काम बनाये। उसने अपने मित्र मनुष्यों के लिये भी बहुत सी चीज़ें बनायीं, जिनमें आग की साँस लेने वाले वे बैल प्रसिद्ध हैं जिन्हें जैसन* ने मार-डाला था।

जब कभी बलकन के कारखाने में कोई भारी काम होता है तब, इटना-विसयूवियस आदि पहाड़ों में से निकलता हुआ धुआँ, हमको बतला देता है कि वहाँ कोई भारी काम हो रहा है।

---

*इसका हाल पीछे लिखा जा चुका है।
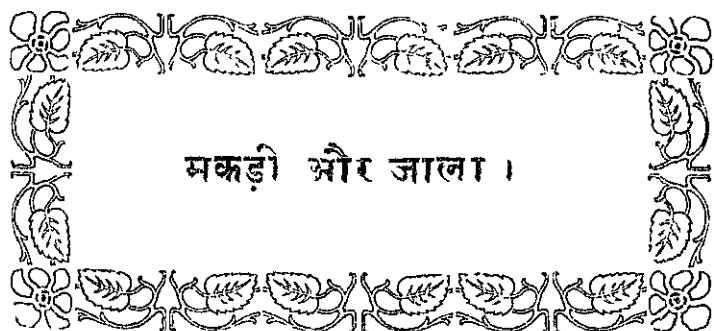
मकड़ी और जाला।

ग्रीस के किसी पुराने नगर में आरकन नाम की एक युवती रहा करती थी। उसके माता पिता बड़े ग़रीब थे पर उसके कारण उनकी दरिद्रता जाती रही। आरकन ने ये रुपये अपनी सुई-कारी की विद्या के सहारे पैदा किये थे।

वह ऐसी सुन्दर सुन्दर चीज़ें अपने कर्घे पर बनाती, और जब वह काम करती तब ऐसी सुन्दर मालूम देती कि दूर दूर से, बड़े बड़े राजे उसे देखने को आते। वह सारे ग्रीस में प्रसिद्ध थी और राजे तथा व्यापारी उसकी बनायी चीज़ों की बड़ी ऊँची क़ीमत लगाते थे।

धीरे धीरे वह धनी और प्रसिद्ध हो गयी। उसकी बड़ाई से ग्रीस गूँज उठा। धीरे धीरे वह अपनी बड़ाई सुनते सुनते बड़ी अभिमानिनी हो गयी। एक दिन उसने अपनी सहेलियों से कहा कि यद्यपि मैं अभी लड़की हूँ; तो भी मैं सीने पिरोने के काम में, विद्या की देवी मिनेरवा से भी बढ़ कर हूँ। तुम जानते हो कि मिनेरवा विद्या की देवी है, और वह ऐसा काम अपना

जी बहलाने के लिये किया करती, जैसा कि आरकन किया करती थी।

जब मिनेरवा ने यह सुना कि आरकन इस तरह घमण्ड की बातें कहती है; तब वह बहुत नाराज़ हुई। क्योंकि देवता केवल धोखा देने ही से अप्रसन्न हो जाते हैं। सो उसने उसके पास जाकर उसे आज़माना (परीक्षा लेना) चाहा।

मिनेरवा ने अपनी शकल एक बुढ़िया जैसी बनायी। अपने बाल सफ़ेद किये, कमर झुकायी और एक लाठी टेकती टेकती वह आरकन के उस मकान की ओर चली, जहाँ वह क़सीदा काढ़ रही थी। वह उसके पास बैठ गयी और उसकी बातें सुनने लगी।

उसका काम देख कर वह बड़ी प्रसन्न हुई। उसने आरकन को उसके अभिमान के लिये क्षमा कर देना चाहा, इसलिये वह बोलीः—

मिनेरवा—आरकन, मुझ बुड्ढी की सीख पर ध्यान दे। मुझे जीवन में बहुत कुछ अनुभव हो चुका है। तू मनुष्यों में अपनी कारीगरी में बढ़ कर है और उसी पर सन्तोष कर। किन्तु देवताओं की बराबरी करने का साहस न किया कर। जो कुछ मूर्खता और अभिमान की बातें तूने अभी कही हैं मिनेरवा से उसकी क्षमा माँग। मैं तुझे विश्वास दिलाती हूँ कि मिनेरवा तुझे क्षमा कर देगी।

यह सुन कर, आरकन ने बुढ़िया का रूप धरे, मिनेरवा की ओर घृणा से देखा और वह बड़ी ढिठाई के साथ बोलीः—

आरकन—अरी, तू तो बुढ़िया है और सठिया गई है। तुझमें ज़रा भी बुद्धि नहीं है। तभी तू भी ऐसी बातें करती है। भला मेरी बराबरी संसार मे या स्वर्ग मे कोई कर सकता है? चाहे मिनेरवा खुद यहाँ आ कर, मेरे सामने मेरी बराबरी करने की कोशिश करे, मैं साबित कर दूँगी कि मिनेरवा मुझसे बढ़ कर है या मैं मिनेरवा से बढ कर हूँ। मिनेरवा तो मेरा सामना करने में खुद डरती है, नहीं तो यहाँ आ कर मेरा मुक़ाबिला न करती?

यह सुन मिनेरवा को बड़ा क्रोध आया। उसने बुढ़िया का वेष छोड़ कर अपना असली स्वरूप धारण किया और उस छोटी सी कुटी मे ठसक के साथ खड़ी हो गयी, और बोली:—

"ले मिनेरवा आ गयी"।

यह देख कर आरकन की सहेलियाँ मारे डर के काँप गयीं। वे उसके पैरों पर गिर पड़ीं और उसकी पूजा करने लगीं। पर आरकन, मूर्खा आरकन ने उसे सिर भी न झुकाया, बल्कि अब वह और भी अभिमान के साथ तन कर बैठ गयी। उसके मुँह पर तनिक भी डर न दिखलायी पड़ा और न उसके हृदय में विद्या की अधिष्ठात्री देवी मिनेरवा के प्रति कुछ भी आदर ही पैदा हुआ। वह मिनेरवा देवी से बोली:—

आरकन-अच्छा हुआ तुम आ गयीं। आज सब को मालूम हो जायगा कि आरकन क़सीदा काढने मे मिनेरवा से बढ़कर है कि मिनेरवा आरकन से बढ़कर है। मैं तुम्हें अपने साथ मुक़ाबिला करने के लिये लल-

करती हूँ और आशा करती हूँ कि तुम अवश्य मेरा मुक़ाबिला करोगी।

मिनेरवा ने गम्भीरता से पास रखा हुआ एक करघा उठा लिया। यह देख आरकन ने भी एक करघा उठा लिया। दोनों चुपचाप काम करने लगीं। उनके पीछे आरकन की सब सहेलियाँ, चुपचाप खड़ी हुईं, दोनों का काम देखने लगीं।

मिनेरवा के करघे के बीच शीघ्र ही एक तस्वीर बनने लगी। उसमें एक लड़ाई का दृश्य दिखलाया गया था जिसमें देवताओं ने योग दिया था, और चारों कोनों में उसने उन आदमियों की दशाओं को चित्रित किया जिन्होंने देवताओं से सामना करने का साहस किया था। ऐसा करके उसने आरकन को उसके साहस के परिणाम की चितौनी दी थी।

इधर आरकन ने काम करना आरम्भ किया। उसके करघे पर ऐसे सुन्दर सुन्दर चित्र बनने लगे कि जिसका नाम। उसके काम के ऊपर जो चिड़ियाँ बनी थीं वे ऐसी मालूम देतीं थीं कि मानों उड रही हैं। उसने जो समुद्र की लहरें बनायीं वे बिलकुल सच्ची मालूम देती थीं, और ऊपर के बादल तो हवा में उड़ते हुए मालूम देते थे। उसके ऊपर जो तस्वीरें बनी थीं वे देवताओं और मनुष्यों के सामना होने की एक कथा वर्णन कर रही थीं जिसमें देवताओं ने भूलें की थीं।

जब दोनों ने अपने अपने करघे नीचे रख कर, उन पर से अपना अपना काम उतारा; तब आरकन की जीत हुई। किन्तु इससे केवल मिनेरवा का क्रोध बढ़ा। जब आरकन ने उसके चेहरे पर क्रोध की झलक देखी, तब वह समझी और पछताने

लगी कि मिनेरवा का अपमान कर के उसने कितनी मूर्खता और बुराई का काम किया है।

किन्तु अब पछताने से क्या होता था। अब भूल सुधारने का कोई उपाय न था। मिनेरवा देवी ने आरकन का क़सीदा छीन लिया और फाड़ डाला। तब उसने अपनी छड़ी उठायी और उसे तीन बार आरकन के सिर पर छुलाया।

आरकन अपने इस अपमान को सहन न कर सकी; उसने पास में पडी एक रस्सी को उठाया, और चाहा कि फाँसी लगा कर अपने दुःख और पछतावे का अन्त कर दे। किन्तु मिनेरवा ने उसे रोक लिया और बोलीः—

मिनेरवा–नहीं, मूर्ख लड़की, तू जियेगी सही। पर अब से तू सदा एक जाले से लटकी रहेगी। तेरी सन्तान भी यही दण्ड भोगेगी।

एक ही पल में उसका सारा शरीर अन्तर्द्धान हो गया और उसकी जगह पर एक मकड़ी रह गयी जो अपने जाले पर बिनने लगी।

पाठको! यदि कभी अपने घर के किसी मैले कोने मे, तुम देखोगे तो तुम्हें यह मकड़ी जाला बिनती मिलेगी। यद्यपि वह स्वयं आरकन न होगी; तथापि वह आरकन की सन्तान में से कोई होगी, जिसके अभिमान के कारण उसे इस योनि में जन्म लेना पड़ा।

बालकों! अब तुम समझे कि अभिमान करने वालों, और अपने बड़ों की बराबरी करने वालों की क्या दशा होती है?
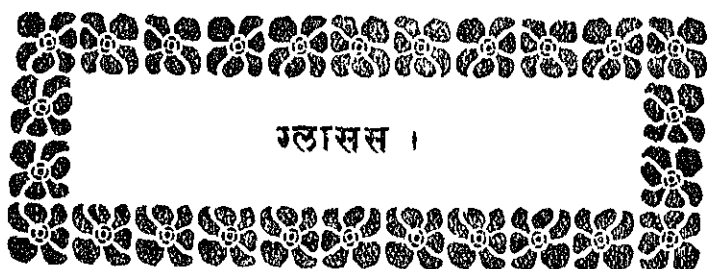
ग्लासस ।

एक समय ग्लासस नामक एक ग़रीब मल्लाह रहता था जो पकड़ी हुई मछलीं बेच कर अपना जीवन निर्वाह करता था। एक दिन उसने जब अपना जाल पानी मे फेंका, तब खींचते समय उसे वह भारी जान पड़ा। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने प्रसन्नता के साथ जाल बाहर निकाला। उसने देखा कि उस जाल में बहुत सी अच्छी अच्छी मछलियाँ फँसी है। उसने उन सब को पास की घास पर डाल दिया और दूसरी बार जाल फेंकने की तैयारी करने लगा।

पर थोड़ी ही देर में उसने देखा कि वे सब मछलियाँ घास चर रही हैं और इधर उधर उड़ रही हैं। यह देख उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। किन्तु पीछे से उसे तब और भी अधिक आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि वे सब मछलियाँ फिर पानी में घुस गयीं और तैर कर ग़ायब हो गयीं। ग्लासस ने चिल्ला कर अपने आप कहा —

"वाह! यह घास कैसी विचित्र है! जब इस घास ने मछलियों के साथ इतनी भलाई की है तो निस्सन्देह मेरे साथ भी यह घास बहुत कुछ भलाई करेगी।"

इतना कह कर उसने थोड़ी सी घास तोड़ ली और उसे चबाने लगा। जैसे ही उस घास का रस उसके मुँह के नीचे उतरा और खून से मिला, वैसे ही उसे एक विचित्र प्रकार की चपलता मालूम होने लगी। थोड़ी देर तक वह इधर उधर घूमता रहा, पर अन्त में उसकी इच्छा नहाने की हुई। वह अपने को रोक न सका और धड़ाम से समुद्र में कूद पड़ा। जैसे ही वह समुद्र में कूदा, वैसे ही वह डूब गया।

नेपच्यून यह सब हाल देख रहा था। जैसे ही ग्लासस डूबने लगा, वैसे ही उसने उसे पकड़ लिया और वह उसे अपने महल में ले गया। वहाँ उसने उसे समुद्र का एक देवता बना दिया।

अब ग्लासस सदा पानी में रहने लगा। उसकी दाढ़ी बढ़ आयी। उसके बाल बिलकुल समुद्र की लहरों के रँग के हो गये। वह मल्लाहों का देवता बनाया गया। वह उन पर बड़ी दया करता था। क्योंकि वह खुद अपनी दशा जानता था। इसलिये वह उनके पास बहुत सी मछलियाँ भेजा करता; जिससे वे उससे बड़े प्रसन्न रहते और उसका आदर किया करते थे।

इसी तरह बहुत दिन बीत गये। अन्त में एक दिन जब वह समुद्र की लहरों पर तैर रहा था, उसने एक सुन्दर स्त्री को देखा, जो समुद्र के किनारे टहल रही थी।

जब वह वहाँ से अपने घर चला तब ग्लासस ने उसका पीछा किया और जब वह एक पहाड़ी पर चढ़ने लगी; तब ग्लासस लौट आया। उसने ग्लासस को अपने पीछे आते हुए नहीं देखा था।

ग्लासस लौट आया और समुद्र पर तैर कर, अपने घर चला गया।

दूसरे दिन वह फिर वहाँ आया और उस अप्सरा को जिसका नाम लिया था, देखता रहा। जब वह जाने लगी; तब उसने फिर उसका पीछा किया और उस पहाड़ी से फिर लौट आया।

इसी तरह वह नित्य वहाँ आ कर उसका पीछा करता। अन्त में एक दिन जब वह उस पहाड़ी से जाने लगी; तब उसने उसे बुलाया। सिला को देख कर उसे बड़ा अचरज हुआ, क्योंकि ग्लासस के शरीर का ऊपरी भाग तो आदमी का था और नीचे का मछली का। वह ठहर गयी और बोली:—

सिला-महाशय! मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि कृपया मुझे बतलाइये कि आप मनुष्य हैं या समुद्र के कोई दैत्य है?

ग्लासस-सिला! इस समय तो मैं समुद्री देवता हूँ, और असल में तो यह कहना चाहिये कि मैं मल्लाहों का देवता हूँ। किन्तु पहले तो मैं मनुष्य ही था। एक बार मैंने एक जगह जा कर समुद्र में अपना जाल डाला और उसमे बहुत सी मछलियाँ फँस गयीं। जब मैंने उन्हें पास की घास में डाला तब वे उसे चरने लगीं और फिर उड़ने लगीं और समुद्र में तैर गयीं, यह देख मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने भी थोड़ी सी घास चबायी। जैसे ही उसका रस लोहू में मिला वैसे ही मेरी भी समुद्र में कूद पड़ने की इच्छा होने लगी। अन्त में मैं समुद्र में कूद पड़ा। मैं डूब जाता यदि नेपच्यून मुझे न बचाते। उन्होंने मुझे एक महल दिया और मल्लाहों का देवता बनाया। एक दिन मैं दिन भर काम कर के अपने महल को लौट रहा था कि मैंने तुम्हें समुद्र के किनारे टहलते

देखा। उसी समय से मुझे तुम पर अनुराग उत्पन्न हुआ है और अब मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझसे अपना विवाह कर लो। तुम, इस समुद्र में, जिसे तुम इतना अधिक चाहती हो, देवी बन कर बिना रोक टोक घूम सकोगी।"

किन्तु सिला ने उस विचित्र आदमी को कुछ भी न समझा। वह उसे कुछ भी उत्तर दिये बिना ही वहाँ से चली गयी और मल्लाहों के देवता को शोक में छोड़ गयी। वह भी समुद्र के नीचे अपने महल में लौट गया।

दूसरे दिन फिर भी वह वहाँ आया; जहाँ वह सिला को घूमते देखा करता था। पर आज वह वहाँ न आयी थी। वह कई दिन वहाँ गया किन्तु सिला ने अब वहाँ का आना जाना ही छोड़ दिया था। अन्त मे वह बड़ा दुःखी हुआ और उसने उसे दूसरी तरह से वस में करना चाहा।

उसके महल के पास एक जादूगरनी रहा करती थी। वह उसके पास दौड़ा गया और उससे एक ऐसी औषध माँगी जिससे सिला उससे प्रेम करने लगे। किन्तु ऐसा हुआ कि वह जादूगरनी खुद ही ग्लासस से, बहुत दिन से प्रेम करती आती थी। सो उसने उसे बहुत समझाया कि सिला उसके योग्य नहीं है, और यदि वह उसके महल में रहेगा तो वह उसे प्रसन्न और सुखी बना देगी। किन्तु ग्लासस ने उत्तर में कहा:—

ग्लासस—चाहें समुद्री पेड़, पहाड़ों के शिखरों पर उगने लगें और पहाड़ों के पेड़ समुद्र में। पर तब भी, जब तक सिला जीवित है, मैं उसे न छोड़ूँगा।

यह सुन उस जादूगरनी ने सोचा कि इस समय ग्लासस की प्रार्थना को तो कम से कम मान ही लेना चाहिये।

जादूगरनी सिला से घृणा करती थी, और उसने अपने मन में सिला का कोई भारी अनिष्ट करना निश्चित किया। उसने ग्लासस को एक शीशी में पानी सा कुछ दिया और उसे उस जगह जहाँ सिला नहाती थी डाल देने को कहा।

वह शीशी ले कर ग्लासस अपने घर, खुशी खुशी लौट आया। उसने उस जगह का पता लगा कर जहाँ सिला नित्य सन्ध्या को स्नान किया करती थी, वह औषध वहाँ डाल दी। वह बेचारा क्या समझता था कि उस जादूगरनी ने उसके साथ कैसी चाल खेली थी।

सन्ध्या होते ही, सिला उस जगह आयी और वहाँ कपड़े उतार कर पानी में उतरी और धीरे धीरे नहाने लगी।

किन्तु वह औषध जिसे जादूगरनी ने ग्लासस को दी थी बड़ी भयङ्कर थी। जैसे ही उसने पानी में पैर रखा वैसे ही उसके पैरों ने अपनी शकल बदल दी और जहाँ उसकी टाँगें थीं; वहाँ अब छः भयानक कुत्ते हो गये।

पहिले तो उसने सोचा कि वे केवल पानी में हैं इसलिये वह मारे भय के चिल्ला कर किनारे की ओर भागी। पर जब वह बाहर आयी; तब उसने देखा कि वे राक्षस उसके शरीर में ही हैं तब उसे बड़ी घृणा आयी; और वह पहाड़ की चोटी से समुद्र में कूद पड़ी और मर गयी।

वह गिर कर एक चट्टान हो गयी। तब से अब तक समुद्र का वह भाग जहाँ वह चट्टान है, बड़ा भयङ्कर है और वहाँ अक्सर जहाज़ डूब जाते हैं।

बेचारा ग्लासस बहुत दिनों तक सिला के लिये शोक करता रहा और फिर कभी उस जादूगरनी के पास न गया।

आज भी सिला राक भूमध्यसागर में मौजूद है।

अपालो और डायना का लड़कपन।
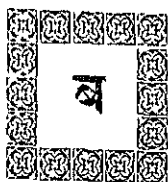
बहुत दिन हुए ग्रीस में लाटोना नाम की एक स्त्री रहा करती थी। वह बड़ी ही सुन्दरी थी, किन्तु उसका जीवन बड़े दुःख में बीता।

जूनो लाटोना से घृणा करती थी, और इसी कारण लाटोना को घूमना पड़ता था। एक जगह से दूसरी जगह भागना पड़ता था क्योंकि महारानी जूनो उससे नाराज़ थी।

एक दिन वह एक झरने के किनारे आयी। वह पार जाना चाहती थी, वहाँ उसने देखा कि एक नाव किनारे पर बँधी है किन्तु डाँड़ नहीं है। नदी धीरे धीरे बह रही थी।

बेचारी लाटोना इतनी थकी थी और उसका जी इतना टूट गया था कि वह वहाँ ज़रा भी देर न ठहर सकी। वह नाव पर बैठ गयी और किनारे से उसे ढकेल दिया। वह नाव पर बैठी अपने हाथों से मुँह ढाँपे रो रही थी। रात हो गयी तब भी नाव बराबर चली जाती थी।

जब लाटोना को होश हुआ, तब सबेरा हो चुका था और उसने सोचा कि वह कई दिन तक बहती रही है। उसने देखा कि नाव बहती बहती एक द्वीप में आ लगी है।

वह द्वीप बड़ा सुन्दर था। सारा द्वीप सुन्दर सुन्दर पेड़ों से ढका था और द्वीप के किनारे किनारे फूलों के सुन्दर सुन्दर पेड़ लगे थे, और द्वीप के बीचों बीच एक गुफ़ा बनी थी जो घर का काम देती थी।

गुफ़ा की बगल ही में एक सुन्दर झरना था। उसका पानी स्फटिक की तरह स्वच्छ था। वह पत्थरों के टुकड़ों से टकराता हुआ बहता था।

वहाँ तरह तरह के फल और मूल पैदा होते थे। सचमुच वह एक बड़ी ही सुन्दर जगह थी। लाटोना वहाँ रह कर बड़ी प्रसन्न हुई। उसने सोचा कि जूनो उसे समुद्र के इस छिपे कोने मे नहीं पा सकती।

थोड़े दिनों के बाद एक देवता ने उसे एक लड़का और एक लड़की दी। लाटोना इससे बड़ी प्रसन्न हुई। वह सदा दोनों बच्चों की रखवाली करती थी। वे दोनों उसको बड़े प्यारे थे। उसने लड़के का नाम अपालो और लड़की का डायना रखा।

एक दिन जब वह धूप में अपने दोनों बच्चों को लिये बैठी थी, आकाश में एक काला सा बादल छा गया। जब लाटोना ने आँख उठा कर ऊपर देखा; तब उसे मालूम हुआ कि जूनो ऊपर खड़ी है। जूनो ने कड़े शब्दों में लाटोना से उस द्वीप से चले जाने को कहा। यद्यपि वह उस द्वीप को छोड़ना नहीं चाहती थी; तथापि उसे डर था कि जूनो कहीं उसके प्यारे बच्चों को कोई हानि न पहुँचावे। सो उसने दोनों बच्चों को अपनी दोनों बग़लों में दाबा और वह उस द्वीप से चल दी।

अन्त में वह एक रेगिस्थान (मरुभूमि) में आयी। वहाँ घास का एक पत्ता भी उसकी आँखें तर करने को न था। जहाँ तक दिखलाई देता, वहाँ तक केवल बालू ही बालू दीखती थी। बालू इतनी गरम थी कि उसके पैर जल रहे थे और मारे प्यास के उसका गला और होंठ सूख रहे थे। वह इतनी थक गयी थी कि उसको वे दोनों बच्चे बड़े भारी मालूम होते थे। किन्तु वह किसी न किसी तरह इस दुःख को सहन कर रही थी।

एक दिन दूर से उसे कुछ पेड़ और हरियाली दीख पड़ी। थोड़ी दूर चल कर उसे उसमें पानी भी दीख पड़ा। वह उस जगह की ओर झपटी। क्योंकि वह उस समय बहुत ही प्यासी थी।

जब वह उस जगह पहुँची, तब उसने देखा कि वहाँ पर छोटी सी एक तलैया है। उसमें साफ़ नीला पानी भरा है। उसके किनारे किनारे नरकल और ताड के पेड लगे हैं।

वह उस समय बहुत प्यासी थी। सो तलैया के किनारे जाकर वह पानी पीने के लिए झुकी। वहाँ कुछ आदमी नरकल काट रहे थे। उन्होंने लाटोना को पानी पीने से मना किया। ऐसी कड़ी आवाज़ से मना किया कि लाटोना की हिम्मत पानी पीने की न पड़ी और वह बोली:—

लाटोना—क्यों? आप लोग मुझे इस पानी के पीने के लिये क्यों मना करते हैं? यह झील ईश्वर ने केवल आप ही के लिये नहीं बनायी, वरन् इसमें हमारा भी कुछ साझा है। हम कई दिन से बिना पानी पिये इस रेगिस्तान में चली आ रही हैं और मारे प्यास के हमारा गला सूख रहा है। ऐसे समय क्या आपको

उचित है कि आप हमें पानी पीने से मना करें ?

पानी ऐसा ठण्डा और साफ था कि लाटोना बार बार उसे पीने के लिये झुकती, किन्तु वे असभ्य आदमी उसे पानी पीने से मना करते और कहते कि, यहाँ से चली जा, नहीं तो वे उसे बहुत दुःख पहुँचावेंगे। किन्तु वे किसी तरह भी न मानें। अन्त में लाटोना फिर बोली:—

लाटोना—आप कैसे मनुष्य हैं ? भला आप मुझे पानी न पीने दें तो क्या आप इन बेचारे बच्चों को भी पानी पीने से रोकेंगे ? देखिये तो सही इन दोनों के चेहरे कैसे कुम्हला गये हैं। तनिक इन पर तो दया कीजिये।

इतना कह कर उसने दोनों बच्चों को अपनी गोदी से नीचे उतारा। उनके प्यारे से मुँह कुम्हलाये देख कर वज्र-हृदय भी पिघल सकता था।

किन्तु वे पशुओं से भी गये बीते थे। जब उन्होंने देखा कि लाटोना इस तरह नहीं मानती तब उन्होंने उस झील में ढेले, कीचड़, राख, बालू आदि फेंकना आरम्भ किया। परिणाम यह हुआ कि थोड़ी ही देर में झील में स्वच्छ पानी की जगह कीचड़ ही कीचड़ हो गयी, और उसका पानी पीने योग्य न रहा।

यह देख लाटोना को बड़ा क्रोध आया। उसने आकाश की ओर हाथ उठा कर ईश्वर से कहा:—

"यदि इस संसार में कोई भी दीन की प्रार्थना
"सुनने को हो और देवताओं में यदि कुछ भी न्याय
"हो, तो ये आदमी दण्ड पावें और सदा इसी
"कीचड़ में रहें।"

देवताओं ने उसकी प्रार्थना सुनी, और उन्होंने उसे स्वीकार भी किया। वे दुष्ट आदमी उसी समय मेंढक बना दिये गये। आज भी वे कीचड़ में, नालियों में और ताल पोखरों में पाये जाते हैं। कभी वे पानी मे कूदते हैं कभी उछल कर सूखे में आ बैठते हैं। बर्सात के दिनों में, ख़ास कर रात के सन्नाटे में; इनकी टर्र टर्र तुम सुन सकते हो।

लाटोना के विपत्ति के दिन बिदा हो गये वह नहीं रहने लगी। अपालो और डायना जब बड़े हो गये तब वह सुखी हुई। दोनों ने उसकी ख़ूब सेवा की। वे ऐसे पुत्र थे जैसे कि सुपुत्रो को होना चाहिये।

जुपिटर ने ये दोनों पुत्र उसे दिये थे। उसने उन दोनों को अपने ही सा बुद्धिमान बनाया। तब से जब कभी अपालो और डायना का ज़िकिर आया है; तभी अपालो सूर्य का देवता और गानविद्या का देवता, तथा उसकी प्यारी बहिन डायना चन्द्रमा की देवी के नाम से विख्यात है। वे दोनों अपनी माँ का इतना आदर करते थे कि जो कुछ वह करती वही उनके लिये नीति थी और जो कुछ वह आज्ञा देती उसको वे कभी बिना किये न रहते।

कैलिस्टो और आरकस ।

यह कहानी एक स्त्री की है जिससे तुम सब स्नेह करोगे और निस्सन्देह कैलिस्टो और आरकस को प्रायः सभी चाहते थे। क्योंकि वह बड़ी सुन्दर और भली थी। जो कोई उससे एक बार मिलता वह फिर भी उससे मिलने की इच्छा रखता।

जब कभी वह अपनी सहेलियों के साथ शिकार खेलने जाती, (जैसा कि वह अक्सर जाया करती थी); तब वह आप ही सब की मुखिया बन जाती। वह सदा हरे भरे जंगलों को पसन्द करती; और अपनी सहेलियों के साथ घूमती थी। वह सदा हँसती और दूसरों को हँसाया करती थी।

किसी कारण से जूनो उससे घृणा करती थी, और जैसे जैसे वह बड़ी होती और सुखी होती वैसे ही वैसे जूनो उससे और अधिक घृणा करती। अन्त में उसे एक बार जंगल में घूमते घूमते कैलिस्टो मिली। वह उस समय प्रसन्न थी और गा रही थी। एक साथ जूनो के हृदय में क्रोध उमड़ आया।

उससे अपना क्रोध न रोका गया और उसने एक बड़ा ही निर्दय काम करने का इरादा किया। उसने अपना हाथ उठाया

और कुछ जादू के मंत्र पढ़े। एकाएक कैलिस्टो की शकल बदल गयी और जहाँ एक सुन्दरी स्त्री खड़ी थी; वहाँ एक भयङ्कर और बदसूरत रीछनी खड़ी दिखलाई दी।

बेचारी रीछनी, जङ्गल में भागी। जब कभी वह किसी के पैरों की आहट पाती तभी वह जाकर जंङ्गल में छिप जाती। यद्यपि उसका बदन रीछ की तरह था, तो भी उसकी विवेक शक्ति और ज्ञान वैसा ही बना था। वह आदमी और हिंसक जन्तुओं को डरा करती थी और उनसे बचने को सदा छिपी रहती।

पन्द्रह वर्ष तक वह जंगल में रही। उसका भोजन जंगली फल थे और अखरोट तथा शहद भी वह नहीं छोड़ती थी। रात में वह किसी खोखले पेड़ या अँधेरी गुफा में सो रहती। जब कभी वह अपने साथियों के बोल, जब वे शिकार खेलने जाते, सुनती; तब मारे डर के वह गुफ़ा में छिप रहती।

उसे अपने लड़के की बड़ी फ़िकिर थी। वह उसका हाल जानने के लिये बड़ी उत्सुक थी। पन्द्रह वर्ष हुए जब उसने उसे देखा था। तब से उसे एक बार भी उसकी कोई ख़बर न मिली।

उसका लड़का इस बीच में जवान हो गया था। वह लंबा सुन्दर जवान था। अपनी माँ की तरह वह भी शिकार का बड़ा शौकीन था। वह ऐसा अच्छा निशानेबाज़ था कि शायद ही कभी कोई निशाना उससे चूकता था। वह अपने प्यारे शिकारी कुत्ते को लेकर अक्सर शिकार खेलने जाता था।

एक दिन आरकस ने अपना धनुष बाण लिया और अकेला ही जंगल की ओर चला। वह दिन भर शिकार खेलता रहा। उसने एक हिरन का पीछा किया और उसका पीछा करते करते

वह एक मैदान मे पहुँचा। वहाँ उसने थोड़ी दूर पर एक बड़ी रीछनी को खड़ा देखा।

यह रीछनी, जो वास्तव में कैलिस्टो थी, आरकस के पैरों की आहट न पा सकी थी और इसीलिये वह छिप न सकी थी, और न अब छिप ही सकती थी। अब उसने देखना चाहा कि कौन आ रहा है। उसने आँख उठा कर देखा तो अपने प्यारे पुत्र आरकस को पहिचान लिया और वह अपने सुन्दर पुत्र की ओर टकटकी लगा कर देखने लगी। उसने उससे बात चीत करनी चाही किन्तु उसने सोचा कि उसका गुर्राना शायद उसे कहीं डरा न दे।

पहिले तो आरकस एकाएक अपने सामने एक बड़े रीछ को देख कर अकचका गया, किन्तु शीघ्र ही उसकी टकटकी देख कर वह डर सा गया। उसकी निगाह में कुछ ऐसा शोक था कि उसको कुछ ऐसा भय मालूम हुआ कि जिसका वह वर्णन नहीं कर सकता था। उसने काँपते काँपते अपना धनुष उठाया और अपनी माता को बिना जाने उस पर निशाना ठीक किया।

जैसे ही उसने तीर छोड़ना चाहा एकायक जुपिटर प्रगट हुए और उसके हाथ से उन्होंने धनुष और बाण दोनों छुड़ा लिये। जुपिटर सदा कैलिस्टो को चाहते और उस पर निगाह रखते थे। जूनो ने जो बर्त्ताव उसके साथ किया था, उसके लिये वे दुःखी थे। अपनी स्त्री की निर्दयता का प्रतिशोध करने के लिये उन्होंने माता और पुत्र दोनों को चमकते सितारे बना दिया। इन बड़े रीछ और छोटे रीछ को तुम कभी भी किसी ऐसी रात में, जो साफ़ हो देख सकते हो।

जब जूनो ने इन दोनों नये सितारों का हाल सुना, तब वह बड़ी नाराज़ हुई। उसने कैलिस्टो और आरकस को अपना